हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 344, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 7 जून, 2023 दिन बुधवार गाजीपुर/वाराणसी

विकासशील देश जिन चुनौतियों का सामना कर रहे उनसे हम अनजान नहीं : जयशंकर

विदेश मंत्री ने भारत-नामीबिया संयुक्त आयोग की बैठक को किया संबोधित

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत-नामीबिया संयुक्त आयोग की बैठक को संबोधित करते हुए कहा है कि दुनिया आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जो लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं और विकासशील देश इसका विशेष शिकार रहे हैं। उन्होंने नामीबिया के उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री नेटुम्बो नंदी नदितवाह के साथ विंडहोक में पहली भारत-नामीबिया संयुक्त आयोग की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आज जब हम मिल रहे हैं, हम दुनिया से अनजान नहीं हो सकते हैं, उन चुनौतियों से अनजान नहीं हो सकते, जिनका सामना कर रहे हैं और वे हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। विकासशील देश इसका विशेष शिकार रहे हैं। जयशंकर ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक लागतों के अलावा, उच्च ब्याज दरों, तनावपूर्ण भू-राजनीतिक स्थितियों के साथ ऋण संकट के साथ संयुक्त महामारी के बाद उत्पन्न स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक

चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। तो निश्चित रूप से यह समय है, हमारे जैसे देशों के लिए एक साथ काम करने का, एक साथ सोचने का, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सहयोग करने का है लेकिन यह एक मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी बनाकर सबसे अच्छा किया जाता है। विदेश मंत्री ने उम्मीद जताई कि संयुक्त आयोग विचारों, नवाचारों, कौशल और प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच बन जाएगा और हम फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य, हरित और स्वच्छ ऊर्जा जैसे कई क्षेत्रों में देखेंगे, क्योंकि हम भी डिजिटल युग में तेजी से हरित हाइड्रोजन में शामिल हो रहे हैं। जयशंकर ने कहा, आज एक अनूठा और महत्वपूर्ण अवसर है क्योंकि संयुक्त आयोग, जो हमारे संबंधों को आगे बढ़ाएगा, जो स्पष्ट रूप से हमारे द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा और मूल्यांकन करेगा, नए के साथ आएगा।

नामीबिया के राष्ट्रपति से मिलकर प्रधानमंत्री की ओर से दी बधाई- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने नामीबिया के राष्ट्रपति हेज जिंगोब से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से बधाई दी। बैठक के बाद जयशंकर ने ट्वीट किया, इतनी गर्मजोशी से मेरा स्वागत करने के लिए नामीबिया के राष्ट्रपति हेगेगेइंगोब का धन्यवाद। पीएम नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत अभिवादन से अवगत कराया। उन्होंने कहा, हमारे रिश्ते के लिए उनकी भावनाओं और इसे आगे ले जाने के दृष्टिकोण की कद्र की। विदेश मंत्री ने जिंगोब को उत्पादक संयुक्त आयोग की बैठक के बारे में भी जानकारी दी जो सोमवार को पहले हुई थी और दोनों देशों के बीच साझेदारी को और गहरा करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। गौरतलब है कि चार जून को तीन दिवसीय यात्रा पर नामीबिया पहुंचे जयशंकर ने देश के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री नेटुम्बो नंदी-नदैतवाह से मुलाकात की थी और द्विपक्षीय सहयोग से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की थी। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, दोनों नेताओं ने ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, परिवहन और कनेक्टिविटी, डिजिटल, फार्मास्यूटिकल्स, खाद्य सुरक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर चर्चा की।

रेलवे को पत्र लिखकर तीन महीने पहले ही अधिकारी ने जताया था दुर्घटना का अंदेशा

लखनऊ। ओडिशा में हुए ट्रेन हादसे से तीन माह पहले ही रेलव के बड़े अधिकारी ने दुर्घटना का संभावित अंदेशा जताया था। इसके लिए उसने सरकार को पत्र भी लिखा था। इस हादसे के पीछे की वजह तो जांच रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी, लेकिन फिलहाल रेलवे के एक अधिकारी का पत्र चर्चा में है। इस चिट्ठी में रेल अधिकारी ने हादसे से करीब 3 महीने पहले ही बड़ी दुर्घटना का अंदेशा जताया गया है। अधिकारी ने बताया है कि कैसे सिग्नल सिस्टम की एक खामी के कारण बड़े हादसे हो सकते हैं। जिस अधिकारी हरिशंकर वर्मा ने रेलवे बोर्ड को पत्र लिखा है, वह उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में तैनात हैं। वह तीन साल तक दक्षिण पश्चिम रेलवे में तैनात रहे हैं। वह तब प्रिंसिपल चीफ ऑपरेशन मैनेजर थ। उनकी तैनाती के दौरान दक्षिण पश्चिम रेलवे में ट्रेन को गलत लाइन पर जाने के मामले सामने आए थे। पत्र में रेलवे अधिकारी हरिशंकर ने जिस खामी की बात की। वह इंटरलॉकिंग के लिए बनाए गए सिस्टम को बाईपास करके लोकेशन बॉक्स में हुई छेड़खानी से जुड़ा हुआ था। पत्र में उन्होंने रेलवे बोर्ड को इस पर तत्काल रोक लगाने की अपील की है। तात्कालीन घटना का जिक्र करते हुए पत्र में लिखा गया है कि जो भी घटना हुई उसे सीरियसली तौर पर देखा जाए।

एसआईटी पहुंची बृजभूषण शरण सिंह के घर, 15 करीबियों से की पूछताछ

रेसलर्स ने रेलवे की नौकरी ज्वाइन करने के बाद भी आंदोलन जारी रखने का किया ऐलान

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की एसआईटी टीम भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष व सांसद बृजभूषण शरण सिंह के घर रात में पहुंची, जहां 15 से भी अधिक करीबियों से गहन पूछताछ की। गौरतलब है कि महिला पहलवानों द्वारा लगाए गए यौन शौषण के आरोपों का सामना कर रहे भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष और बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह की मुश्किलें और बढ़ती जा रही है। दिल्ली में जहां बृजभूषण पर पॉक्सो का केस दर्ज है।

वहीं अब इस मामले में जांच कर रही दिल्ली पुलिस अब उनके आवास पर पहुंची है। मिली जानकारी के अनुसार दिल्ली पुलिस ने यूपी की राजधानी लखनऊ और गोंडा जिले में 15 से ज्यादा कर्मचारियों से पूछताछ की और उन लोगों के नाम पते और पहचान पत्र साक्ष्य के तौर पर जुटाए हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, रविवार रात को दिल्ली पुलिस की एसआईटी ने बृजभूषण शरण सिंह के घर विश्नोहरपुर में पहुंचकर उनके 15 करीबियों के बयान लिए हैं, जिनमें उनके परिवार, साथ काम करने वाले और सिक्योरिटी शामिल है। गौरतलब है कि एसआईटी इस मामले में अब तक 137 लोगों के बयान ले चुकी है। फिलहाल, अभी यह पता नहीं लग पाया कि दिल्ली पुलिस ने बृजभूषण से भी कुछ पूछताछ

की है या नहीं। अभी तो सिर्फ इतनी ही जानकारी है कि, पुलिस ने बीजेपी नेता के करीबियों से बातचीत की है। बता दें कि बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल रेसलर्स बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट ने रेलवे की नौकरी छोड़ने की धमकी दी है। हालांकि सोमवार को ही उन्होंने अपनी ड्यूटी जॉइन की है। जबकि 23 अप्रैल को आंदोलन शुरू होने के बाद से ही वह छुट्टी पर चल रहे थे। कयास लगाए जा रहे हैं कि इन रेसलर्स ने नौकरी छोड़ने का एलान किया है। इसी बीच पहलवानों के ड्यूटी पर लौटने के बाद यह पता चला है कि, बृजभूषण पर यौन शोषण का आरोप लगाने वाली नाबालिग रेसलर अपने बयान से पलट गई है। दावे के मुताबिक, नाबालिग ने दिल्ली के कनॉट प्लेस पुलिस थाने में बयान दिए। इसके बाद उसे पटियाला हाउस कोर्ट ले जाया गया, जहां उसने बयान वापस ले लिया। यह भी जानकारी मिली है कि, 7 जून को चरखी दादरी जिले के बलाली गांव में सांगवान खाप-40 ने सर्वखाप सर्वजातीय महापंचायत बुलाई गई है। जिसमें विनेश और संगीता फोगाट आ सकती है। इधर मंगलवार को साक्षी मलिक ने भी रेलवे की नौकरी पर आमद कर दी है। लेकिन जब वह दोबारा लौटी तो खबरों का बाजार गर्म हो गया कि वह आंदोलन से पीछे हट गई हैं और उन्होंने नौकरी ज्वाइन कर ली है। इसी तरह का मामला बजरंग पुनिया के साथ आया। लेकिन उन्होंने भी खबरों का खंडन किया। अब साक्षी मलिक और बजरंग पुनिया ने कहा कि वह नौकरी ज्वाइन करने जरूर आए हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनका आंदोलन खत्म हो गया है। बृजभूषण के खिलाफ उनकी लड़ाई जारी है।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में इंदौर के कारोबारी दिलीप सिसोदिया गिरफ्तार, 7 दिन तक ED की हिरासत में रहेंगे

नई दिल्ली। हाउसिंग कोऑपरेटिव की अवैध बिक्री से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने इंदौर के कारोबारी दिलीप सिसोदिया को गिरफ्तार किया है। ईडी ने दीपक सिसोदिया उर्फ दीपक जैन मड्डा को तीन जून को गिरफ्तार किया था। एक विशेष पीएमएलए अदालत ने ईडी को दिलीप सिसोदिया की सात दिन की हिरासत दी है। ईडी ने इंदौर में दर्ज विभिन्न प्राथमिकियों के आधार पर अपनी जांच शुरू कर दी है। यह मामला सिसोदिया द्वारा अन्य बिल्डरों और डेवलपर्स की मिलीभगत से हाउसिंग को-ऑपरेटिव सोसाइटीज की जमीनों की अवैध बिक्री और अन्य हस्तांतरण से संबंधित है। पीएमएलए जांच से पता चला है कि विभिन्न आरोपी व्यक्तियों ने एक-दूसरे के साथ मिलकर अवैध रूप से इंदौर में सहकारी समितियों से संबंधित भूमि के बड़े हिस्से को बेचा। सिसोदिया पर आरोप है कि उसने अन्य लोगों के साथ मिलकर हाउसिंग को-ऑपरेटिव

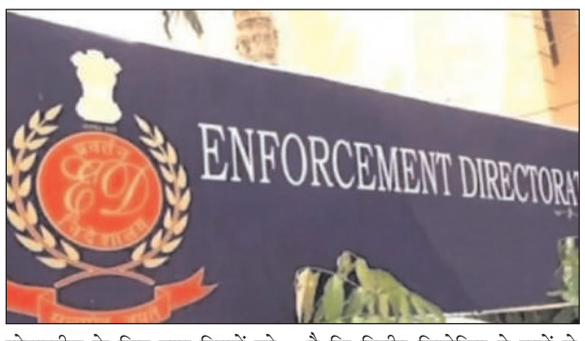

सोसाइटीज के लिए लागू नियमों को दरकिनार कर दिया और सोसायटियों से संबंधित भूमि को कम कीमत पर बेच दिया। इन जमीनों की बाजार कीमत एक हजार करोड़ रुपये से अधिक आंकी जा रही है।

जानकारी के लिए बता दें कि हाउसिंग को-ऑपरेटिव सोसाइटीज को अर्बन लैंड सीलिंग एक्ट की धारा 20 के तहत छूट दी गई थी। यहीं कारण है कि वे विभिन्न व्यक्तियों के लिए निर्धारित भू-जोत सीमा से अधिक भूमि का अधिग्रहण कर सकते थे। ईडी की जांच में पता चला है कि दिलीप सिसोदिया ने इनमें से कुछ सोसायटियों में चुनावों में हेराफेरी करके पदाधिकारी के रूप में निर्वाचित होकर प्रवेश किया था। कई बार उन्होंने हाउसिंग को-ऑपरेटिव सोसाइटी में निर्णय लेने वाले पदों पर अपने ज्ञात व्यक्तियों को रखकर अप्रत्यक्ष रूप से निर्णय लिए। इससे पहले ईडी ने दिलीप सिसोदिया और उनके सहयोगियों के परिसरों की तलाशी ली थी। तलाशी में ईडी को 91.21 लाख रुपये नकद और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए थे।

'भारत-सूरीनाम के लोगों में बहुत समानता, घर जैसा एहसास', सांस्कृतिक कार्यक्रम में बोलीं राष्ट्रपति मुर्मु

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु इन दिनों सूरीनाम के दौरे पर हैं। यहां पर उन्होंने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने सूरीनाम की तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें यहां पर अपने घर जैसा महसूस हो रहा है। यहां आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। यहां के सभी प्रतिनिधिमंडल की ओर से किए गए स्वागत और आतिथ्य से मैं बहुत अभिभूत हूं। मैं भारत के आपके भाइयों और बहनों की ओर से आपको शुभकामनाएं देती हूं। आपके देश की यह मेरी पहली यात्रा है और आज का दिन एक विशेष अवसर भी है। आपको देश के हरियाली, पेड़-पौधे और शुद्ध हवा से बहुत ही अच्छा वातावरण बनता है, लेकिन जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित किया है, वो सूरीनाम के लोगों का विविधता, स्वागत, सेहत और उत्साह। विविधता के लिए प्रसिद्ध भारत और सूरीनाम के लोग दूसरों से सहजता से घुल-मिल जाते हैं, कि मुझे लगने लगा है जैसे मैं अपने घर में ही हूं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को 5 जून को सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखियन ने सूरीनाम का सर्वोच्च सम्मान 'ग्रैंड ऑर्डर ऑफ द चेन ऑफ द येलो स्टार' से सम्मानित किया। राष्ट्रपति मुर्मु भारत की पहली महिला राष्ट्रपति हैं, जिसे इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्होंने इस पुरस्कार को दोनों देशों के नागरिकों और खासकर

महिलाओं को समर्पित किया। इस मौके पर राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा, "यह सम्मान भारत के लिए काफी महत्व रखता है। दोनों देशों (भारत और सूरीनाम) में महिलाओं के लिए सशक्तिकरण और प्रोत्साहन के प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करता है, जिसकी वजह से यह और भी सार्थक हो जाता है।" राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी के निमंत्रण पर 4-6 जून की राजकीय यात्रा पर सूरीनाम पहुंची हैं।

मणिपुर में फिर हिंसाः उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में BSF जवान शहीद, 2 जवान भी घायल; किया गया एयरलिफ्ट

मणिपुर। सेना के अधिकारियों ने बताया कि मणिपुर के सेरो में सुरक्षाबलों और उग्रवादियों के एक समूह के बीच 5-6 जून की दरमियानी रात एक बार फिर गोलीबारी की खबर सामने आई है। इसमें सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक जवान की मौत हो गई, जबकि असम राइफल्स के दो जवान गंभीर रूप से घायल हैं। भारतीय सेना के स्पीयर कोर ने एक बयान में कहा, "बीएसएफ के एक जवान की गंभीर रूप से घायल होने के कारण मौत हो गई, जबकि असम राइफल्स के दो जवान गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हैं।" अधिकारियों ने बताया कि घायल असम राइफल्स के जवानों को विमान से मंत्रिपुखरी ले जाया गया है। साथ ही, उन्होंने कहा "असम राइफल्स, बीएसएफ और पुलिस द्वारा मणिपुर में सुगनू/सेरौ के क्षेत्रों में व्यापक व्यापक सर्चिंग अभियान चलाए गए। सुरक्षा बलों और विद्रोहियों के समूह के बीच 5-6 जून की रात को रुक-रुक कर पूरी

रात गोलीबारी हुई, सुरक्षा बलों ने प्रभावी ढंग से जवाबी कार्रवाई की।"

तेजी से चलाया जा रहा सर्च ऑपरेशन- असम राइफल्स, सीएपीएफ (केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल) और पुलिस के साथ भारतीय सेना ने मणिपुर में हाल के संकट के बाद व्यापक रूप से अभियान शुरू कर दिया है और सर्च ऑपरेशन भी तेजी से चल रहा है।

भारी मात्रा में हथियार बरामद- सेना के अधिकारियों ने कहा कि सेना, असम राइफल्स, पुलिस और सीआरपीएफ ने शनिवार को पूरे मणिपुर में पहाड़ी और घाटी क्षेत्र में एरिया डोमिनेशन ऑपरेशन शुरू किया। मानव रहित हवाई वाहनों और क्वाडकॉप्टरों की निगरानी के जरिए अब तक 40 हथियार (ज्यादातर स्वचालित), मोर्टार, गोला-बारूद और अन्य जंगी सामान बरामद किए गए हैं। मणिपुर सरकार ने राज्य में इंटरनेट को 10 जून तक बंद रखने का फैसला लिया है। आयुक्त (गृह) एच ज्ञान प्रकाश द्वारा जारी एक आदेश में कहा गया है कि ब्रॉडबैंड सहित मोबाइल डेटा सेवाओं का निलंबन 10 जून की दोपहर तीन बजे तक बढ़ा दिया गया है।

अखिलेश यादव की लोक जागरण यात्रा : खीरी से चुनावी अभियान की शुरूआत, दलित-पिछड़ों को साधने की कवायद

लखीमपुर खीरी। लोकसभा चुनाव-2024 को लेकर समाजवादी पार्टी (सपा) तैयारियों में जुट गई है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जातिगत जनगणना और सामाजिक न्याय के मुद्दे पर लोक जागरण यात्रा निकालने जा रहे हैं। इसकी शुरूआत लखीमपुर खीरी से हो गई है। बताया जा रहा है कि देवकली में होने वाले सपा के प्रशिक्षण शिविर में अखिलेश यादव ने लोक जागरण यात्रा का आगाज किया। अखिलेश यादव ने सपा के चुनावी अभियान की शुरूआत करने के लिए लखीमपुर खीरी को चुना है। सोमवार को खीरी पहुंचे अखिलेश यादव ने पार्टी पदाधिकारियों के घर जाकर आगे की रणनीति तय की। दुधवा में रात्रि विश्राम किया। मंगलवार को अखिलेश यादव देवकली में होने रहे सपा के प्रशिक्षण शिविर में पहुंचे। इस कार्यक्रम में जिलेभर के सपा पदाधिकारी और कार्यकताओं को बुलाया गया है। सपा मुखिया ने प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते कार्यकताओं में जोश भरा। भाजपा को निशाने पर लिया। अखिलेश यादव ने कहा कि निजीकरण जितना बढ़ाया जाएगा तो हमारे आपके अधिकार छीन जाएंगे। भाजपा के लोग झूठा प्रचार कर रहे हैं। बिना आंकड़ों के भाजपा सबका साथ सबका विकास का दावा कर रही है।

पुलिस एनकाउंटर में पशु तस्कर घायल, पत्नी की मौत पर हुआ प्रदर्शन

एसपी ने एसओ समेत तीन पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया जांच का आदेश

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मधुबन गांव निवासी पशु तस्कर विवेक उर्फ विक्की यादव से मंगलवार तड़के पुलिस की मुठभेड़ हुई। जिसमें उसके पैर में गोली लगी है। उसे इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया उसके कुछ देर बाद ही खबर आई कि विक्की यादव की पत्नी नंदिनी की मौत हो गई। विक्की के माता पिता ने पुलिस पर बेटे को घर से उठा कर गोली मारने का आरोप लगाया है। वही मां का आरोप है कि पुलिसकर्मी के धक्के से बहू गिर पड़ी जिससे उसकी मौत हो गई। एनकाउंटर को जहां परिजन फर्जी बता रहे हैं, वहीं बदमाश की पत्नी की मौत के मामले में परिजन पुलिस पर ही पत्नी को मारने का आरोप लगा रहे हैं। मधुबन निवासी हाफ एनकाउंटर में घायल बदमाश विकास उर्फ विक्की के पिता रमेश ने बताया कि विकास अपनी पत्नी के मौसी की रिश्तेदारी में जौनपुर के उचहुआ गया था। वहां एक शादी थी, जिसमें वो शामिल होने पत्नी नंदिनी के साथ गया था। पिता रमेश ने आरोप लगाया कि आधी रात के बाद करीब ढाई बजे रात में खानपुर थाने के सिपाही आकाश सिंह वहां पहुंचे। पत्नी दरवाजा नहीं खोल रही थी। दरवाजा खोलने के

पूर्व उसने पूरे घटना का वीडियो बनाने के लिए मोबाइल को एक टेबल पर खड़ा कर दिया, लेकिन शुरू के कुछ सेकेंड के बाद मोबाइल गिर गया। जिससे वीडियो तो नहीं लेकिन ऑडियो रिकॉर्ड हो गया। आरोप लगाया कि इसके बाद सिपाही ने नंदिनी को धक्का दे दिया और विकास को लेकर चले गए। इधर धक्का देने के कारण नंदिनी के सिर में तेज चोट लग गयी जिसकी वजह से उसकी मौत हो गयी। इधर विक्की का हाफ एनकाउन्टर हुआ, जिसमें उसके पैर में गोली लगी। हालांकि गोली लगने के बावजूद विक्की अपने पैरों पर चलकर जा रहा था। गोली लगने के बाद पुलिस उसे लेकर सैदपुर सीएचसी आयी, जहां से उसे रेफर किया गया। इधर नंदिनी की मौत के बाद परिजन उसे लेकर सीएचसी आये, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद आक्रोशित परिजन शव को लेकर एसपी कार्यालय पहुंच गए और वहां शव को रखकर धरना प्रदर्शन करने लगे। उनका आरोप है कि विकास को फर्जी मुकदमों में फंसाया गया था। कहा कि मुकदमे के मामले में वो नोटिस के बाद न्यायालय में पेश होने

वाला था। आरोप लगाया कि पहले से ही उक्त सिपाही द्वारा हमें धमकाया जा रहा था। उनका कहना था कि तुम्हें गोली मारकर रहेंगे। यहां तक कि कुछ ही दिनों पूर्व पुलिस हमारे घर पर आई थी और घर पर लगे सीसीटीवी कैमरों को तोड़ दिया और डीवीआर को साथ लेकर चले गए थे। उसी समय हमें पूरा शक हो गया था कि शायद ये कुछ करने वाले हैं और रिकॉर्ड न हो जाये, इसीलिए कैमरे तोड़ दिये। पिता ने बताया कि इस घटना के बाद हमने उच्चाधिकारियों से गुहार भी लगाई थी। लेकिन आज उन्होंने अपनी धमकी को सच साबित कर ही दिया। कहा कि नंदिनी की मौत नहीं बल्कि हत्या है। वहीं इस आरोप के बाबत कुछ अन्य लोगों का कहना है कि नंदिनी को किसी ने धक्का नहीं दिया, बल्कि पुलिस द्वारा पति को ले जाने के बाद उसके साथ कोई अनहोनी न हो जाये, इसीलिए वो जल्दबाजी में घर से निकली, जिसमें उसका एक्सीडेंट हो गया। सिर में चोट लगने से उसकी मौत हो गयी। बहरहाल, मामला बेहद पेचीदा हो गया है। दोपहर में एसपी कार्यालय के सामने जोरदार प्रदर्शन किया गया। पुलिस समझाने में जुटी थी। एसपी कार्यालय, एसपी आवास, डीएम आवास को छावनी में तब्दील कर दिया गया था। फिलहाल पुलिस अधीक्षक ने एसओ समेत तीन पुलिसकमीयों को निलंबित कर जांच का आदेश दिया है।

संपादकीय

सेतु का ढहना शासन तंत्र में फैले भ्रष्टाचार का नमूना है

बिहार के भागलपुर में गंगा पर बन रहे एक पुल के ढह जाने की घटना ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। भागलपुर को खगड़िया जिले से जोड़ने वाली निमार्णाधीन अगुवानी-सुल्तानगंज पुल ढह गया और इस तरह हादसों के सिलसिले में एक और कड़ी जुड़ गई। साथ ही यह भी उजागर हुआ कि सरकारों और संबंधित महकमों की ओर से किस स्तर की लापरवाही बरती जाती है या भ्रष्टाचार किया जाता है। गौरतलब है कि रविवार को भागलपुर में गंगा पर सत्रह सौ सत्रह करोड़ रुपए से ज्यादा की लागत से बन रहा निमार्णाधीन पुल अचानक ही गिर गया। यही पुल दूसरी ओर से एक बार पहले भी ढह गया था। इसके बाद भी सरकारी दावे सामने आते रहे कि जल्दी ही इस पुल का निर्माण कार्य पूरा कर जनता के लिए खोल दिया जाएगा। इतने दिनों तक पुल का काम लटका रहा और अब जो हुआ, उसमें सिर्फ संयोग से ही आम लोग चपेट में नहीं आए। वरना जिस पैमाने पर यह पुल गिरा, अगर उस पर वाहनों और लोगों की आवाजाही रहती तो अंजाम की त्रासदी का अंदाजा लगाया जा सकता है। हैरानी की बात यह है कि पुल के गिरने की घटना जब उसके वीडियो सहित सुर्खियों में आ गई तब सरकार की ओर से यह सफाई आई कि चूंकि इस पुल का डिजाइन गलत था और जोखिम से भरा था, इसलिए इसे गिराया जाना तय था। इसे स्पष्ट किए जाने की जरूरत है कि पुल खुद ढह गया या फिर उसे गिराया गया। दोनों ही स्थितियों में यह तय है पुल के निर्माण में व्यापक खामियां थीं और वह भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। सरकार की ओर से जारी सफाई में कहा गया कि इस पुल के डिजाइन में बड़ी खामी थी। बिहार के उपमुख्यमंत्री के मुताबिक इस पुल की खामियों के मद्देनजर आइआइटी-रुड़की से इसका अध्ययन कराया गया। विशेषज्ञों ने सूचित किया था कि इसमें गंभीर खामियां हैं। सवाल है कि जब सरकार किसी कंपनी को पुल निर्माण की जिम्मेदारी सौंप रही थी, उससे पहले क्या गुणवत्ता की कसौटी पर पूरी निर्माण योजना, डिजाइन, प्रक्रिया, सामग्री और संपूर्णता को सुनिश्चित किया जाना जरूरी समझा गया था? इतना तय है कि एक ही पुल अगर दो बार भरभरा कर गिरा तो यह डिजाइन गलत होने से लेकर उसमें उपयोग होने वाली सामग्री के घटिया होने का भी साफ संकेत है। लेकिन जिस तरह सरकार उस पुल की गुणवत्ता और जोखिम का अध्ययन करा रही थी, क्या उसके निर्माण के दौरान या उससे पहले डिजाइन सहित उसके हर कसौटी पर बेहतर होने के लिए जांच कराना सुनिश्चित नहीं कर सकती थी? पुल के गिरने से जितने पैसों की बबार्दी हुई, उसकी भरपाई आखिर किससे कराई जाएगी? बिहार में पुल गिरने की ताजा घटना कोई पहली नहीं है। इससे पहले पिछले साल भर में सात पुलों के ढह जाने की खबरें आईं। पुलों के गिरने के लिए उसे बनाने वाली कंपनी की लापरवाही और भ्रष्टाचार जिम्मेदार है। लेकिन उच्च मानकों, बेहतर होने की सौ फीसद कसौटियों और गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के बजाय किसी खास कंपनी से संबंधित महकमे या उसके अधिकारियों द्वारा गलत तरीके से समझौता करना भी भ्रष्टाचार नहीं है? सरकार को अपने बचाव में दलील देने के बजाय पुलों सहित किसी भी निर्माण कार्य में ऐसे इंतजाम करने चाहिए, जिसमें सौ फीसद गुणवत्ता सुनिश्चित कराई जाए और आम जनता खुद को सुरक्षित महसूस करे।

बोल रहे अनाप !

है हमने बनाया ।
करते वो विध्वंश ।।
बातचीत में इसका ।
दे रहे वो अंश ।।
है लेकिन सवाल ।
ना रोके पर आप ।।
बोलने में माहिर ।
बोल रहे अनाप ।।
हास्यास्पद है स्थिति ।
इस पर करें विचार ।।
रहें काम पर केंद्रित ।
है यही व्यवहार ।।
खुल रही जब पोल तो ।
आया नहीं जवाब ।।
ना जाने किस बल पर ।
पाल रहे बस ख़्वाब ।।

–कृष्णेन्द्र राय

बिगड़ते पर्यावरण को बचाने की चुनौती

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण सबसे बड़ी वैश्विक समस्या है। तीन दशकों से महसूस किया जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण से ही जुड़ी है। मानवीय क्रियाकलापों के कारण प्रकृति में लगातार बढ़ते दखल के कारण पृथ्वी पर बहुत से प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हुआ है। आधुनिक जीवनशैली, पृथ्वी पर पेड़-पौधों की कमी, पर्यावरण प्रदूषण का विकराल रूप, मानव द्वारा प्रकृति का बेदर्दी से दोहन इत्यादि कारणों से मानव और प्रकृति के बीच असंतुलन की भयावह खाई उत्पन्न हो रही है। जलवायु परिवर्तन और प्रदूषित वातावरण के बढ़ते खतरे हम अब लगातार अनुभव कर रहे हैं। इसीलिए पर्यावरण की सुरक्षा तथा संरक्षण के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 जून को पूरी दुनिया में ह्यविश्व पर्यावरण दिवसह्ल मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा 16 जून 1972 को स्टॉकहोम में पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए यह दिवस मनाने की घोषणा की गई थी और पहला विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 1974 को मनाया गया था।

पर्यावरण की रक्षा और प्रकृति के उचित दोहन को लेकर हालांकि यूरोप, अमेरिका तथा अफ्रीकी देशों में 1910 के दशक से ही समझौतों की शुरूआत हो गई थी किन्तु बीते कुछ दशकों में दुनिया के कई देशों ने इसे लेकर क्योटो प्रोटोकाल, मांट्रियल प्रोटोकाल, रियो सम्मलेन जैसे कई बहुराष्ट्रीय समझौते किए हैं। अधिकांश देशों की सरकारें पर्यावरण को लेकर चिंतित तो दिखती हैं लेकिन पर्यावरण की चिंता के बीच कुछ देश अपने हितों को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण की नीतियों में बदलाव करते रहे हैं। प्रदूषित वातावरण का खामियाजा केवल मनुष्यों को ही नहीं बल्कि धरती पर विद्यमान प्रत्येक प्राणी को भुगतना पड़ता है। बड़े पैमाने पर प्रकृति से खिलवाड़ के ही कारण दुनिया के विशालकाय जंगल हर साल सुलगने लगे हैं, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को खरबों रुपये का नुकसान होने के अलावा दुर्लभ जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की अनेक प्रजातियां भी भीषण आग में जलकर राख हो जाती हैं। कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान दुनियाभर में पर्यावरण की स्थिति में सुधार देखा गया था, जिसने बता दिया था कि अगर हम चाहें तो पर्यावरण की स्थिति में काफी हद तक सुधार किया जा सकता है लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में पर्यावरण संरक्षण को लेकर अपेक्षित कदम नहीं उठाए जाते। न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में निरन्तर हो रही बढ़ोतरी और मौसम का लगातार बिगड़ता मिजाज गहन चिंता का विषय बना है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने को लेकर चचाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चचाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं। अपनी पुस्तक ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ल में मैंने विस्तार से यह स्पष्ट किया है कि धरती में रह-रहकर जो उथल-पुथल की प्राकृतिक घटनाएं घट रही हैं, उनके पीछे छिपे संकेतों और प्रकृति की मूक भाषा को समझना कितना जरूरी है। आधुनिकरण और औद्योगिकीकरण की दौड़ में हमने हर पल प्रकृति की नैतिक सीमाओं का उल्लंघन किया है और ये सब प्रकृति के साथ इंसान की ज्यादतियों का ही नतीजा हैं, जिसके भयावह परिणाम हमारे सामने हैं।

मानवीय क्रियाकलापों के कारण ही वायुमंडल में कार्बन मोनोक्साइड, नाइट्रोजन, ओजोन और पार्टिक्यूलेट मैटर के प्रदूषण का मिश्रण इतने खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है कि हमें सांस के जरिये असाध्य बीमारियों की सौगात मिल रही है। सीवरेज की गंदगी स्वच्छ जल स्त्रोतों में छोड़ने की बात हो या औद्योगिक इकाईयों का अम्लीय कचरा नदियों में बहाने की अथवा सड़कों पर रेंगती वाहनों की लंबी-लंबी कतारों से वायुमंडल में घुलते जहर की या फिर सख्त अदालती निदेर्शों के बावजूद खेतों में जलती पराली से हवा में घुलते हजारों-लाखों टन धुएं की, हमारी आंखें तब तक नहीं खुलती, जब तक प्रकृति का बड़ा कहर हम पर नहीं टूट पड़ता। पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील कर दिया गया है। धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसके दुष्परिणाम स्वरूप ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के जलमग्न होने की आशंका जताई जाने लगी है।

प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही है कि यदि हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है लेकिन हम हर बार प्रकृति का प्रचण्ड रूप देखने के बावजूद प्रकृति की इन चेतावनियों को नजरअंदाज कर खुद अपने विनाश को आमंत्रित कर रहे हैं। यदि दुनियाभर में पर्यावरण प्रदूषण की विकराल होती वैश्विक समस्या को देखें तो स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे शायद हम कुछ करना ही नहीं चाहते। ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्ल पुस्तकह्ल में बताया गया है कि पर्यावरण का संतुलन डगमगाने के कारण दुनियाभर में लोग तरह-तरह की भयानक बीमारियों के जाल में फंस रहे हैं, उनकी प्रजनन क्षमता पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है, उनकी कार्यक्षमता भी इससे प्रभावित हो रही है। लोगों की कमाई का बड़ा हिस्सा बीमारियों के इलाज पर ही खर्च हो जाता है। प्रकृति हमारी मां के समान है, जो हमें अपने प्राकृतिक खजाने से ढ़ेरों बहुमूल्य चीजें प्रदान करती है लेकिन अपने स्वार्थों के चलते हम अगर खुद को ही प्रकृति का स्वामी समझने की भूल करने लगे हैं तो फिर भला प्राकृतिक तबाही के लिए प्रकृति को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं?

आदिवासियों की शिक्षा का बदलता स्वरूप

जनजातीय लोगों ने आबोहवा की हिफाजत और जंगलों को बचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। अगर पेसा कानून ने सालों पहले ग्राम सभा को सामुदायिक संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार दिया है तो फिर शिक्षा से इन नागरिक संकायों को जोड़ने की बात क्यों नहीं की गई? आजादी के अमृत महोत्सव साल में जनजातीय इलाकों में एक उदासीन लोक पर्व मनाया जा रहा है, क्योंकि अब आदिवासियों के स्कूलों की रंगत और रुतबा बदलने के दिन आ गए हैं। बांग्लादेश, पाकिस्तान और दक्षिण अफ्रीका की तरह मध्य प्रदेश सरकार की ओर से भी राज्य के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में बानबे सरकारी स्कूलों को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) स्वरूप में संचालित करने के लिए निजी हाथों में सौंपने का फैसला लिया गया है। यह निर्णय कई मामलों में अहम है।

अनुमान है कि मध्य प्रदेश की तरह देश भर में देर-सबेर पीपीपी स्वरूप में आदिवासियों की शिक्षा का स्वरूप उभरेगा। सवाल है कि क्या यह फैसला भारत की नई शिक्षा नीति का एक क्षेपक है, यानी भविष्य की जनजातीय शिक्षा की कोई रणनीति है? उल्लेखनीय है कि गुजरात और ओड़ीशा में पीपीपी स्वरूप बहुत पहले अपनाया जा चुका है। तो क्या पीपीपी आधारित जनजातीय शिक्षा के एक नए युग की दस्तक है?

पीपीपी स्वरूप का मतलब यह कतई नहीं है कि निजी संस्थाओं को विद्यालय की जमीन, मकान या अन्य किस्म के संसाधनों का मालिकाना हक सौंप दिया जाता है। मुद्दा महज प्रबंधन का भी नहीं, बल्कि सेवाओं के निष्पादन से है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि पीपीपी स्वरूप की आड़ में सरकार की विफलताएं परदे के पीछे चली जातीं हैं। ओड़ीशा में ऐसा ही देखने को मिला है। दरअसल, यह स्वरूप कोई विचार नहीं है, बल्कि एक विचारधारा है जो जिम्मेदारियों को कम करते हुए एक साधन के रूप में निजीकरण को बढ़ावा देता है। इसमें उम्मीद की जाती है कि विद्यालयों की संख्या बढ़ाकर शिक्षा के अधिकार को शत-प्रतिशत पूरा किया जा सकता है। मध्य प्रदेश के ग्रामीण और वन्य क्षेत्रों में शिक्षा को लेकर व्यापक निराशा है। याद किया जा सकता है कि राज्य के झाबुआ जिले में पढ़ाई छोड़कर काम की तलाश में निकली लड़कियों से जुड़ी खबर हाल ही में सुर्खियों में आई थी। विज्ञापनी दावों में यह बार-बार जताने की कोशिश की जाती है कि जनजातियों के विकास के प्रति मध्य प्रदेश सरकार पूरी तरह से ईमानदार है, हर साल कल्याणकारी उपायों पर भारी-भरकम राशि खर्च की जाती है। लेकिन नतीजों का हाल जगजाहिर है। सरकार का तंत्र कहीं न कहीं

जर्जर हो चुका है। सरकार का कहना है कि प्रारंभिक अनुबंध कक्षा छह से बारहवीं तक के विद्यार्थियों की प्रगति को मापने के लिए सात साल के लिए होगा। ये स्कूल सरकार को गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की कमी की समस्या को दूर करने में सक्षम बनाएंगे। लेकिन राज्य में एक बड़ी समस्या जहां नवासी आदिवासी विकास खंडों के स्कूलों में कई रिक्तियां हैं। अब निजी हिस्सेदार या सहयोगी ही शिक्षकों और कर्मचारियों का चयन करेगा। इस बात के लिए तसल्ली दी गई है कि सरकारी शिक्षक भी वहां काम करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। अपना पल्ला झाड़ते हुए सरकार ने स्पष्ट किया है कि प्रतियोगिता परीक्षा में विद्यार्थियों का अधिकतम चयन सुनिश्चित करने के साथ उनके ज्ञान के स्तर को बढ़ाने की जिम्मेदारी निजी भागीदारों की होगी।

लेकिन सवाल है कि विद्यालयों में रिक्तियों के कारण क्या हैं? अभी तक सरकार के शिक्षा विभाग ने क्या किया? ग्रामीण अंचलों से भी कहीं कठिन इलाकों में स्थित विद्यालयों के हालात क्यों बदतर हैं? सरकार की जवाबदेही किसके प्रति है? क्या सरकार ने बनी-बनाई लीक से हटकर नव्यतम तरीकों को अपनाने की पहल कभी की है? जितनी ईमानदारी बीड़ी पत्ता का मसला सुलझाने में दिखी थी, उतनी ही तत्परता उन आदिवासी विद्यालयों को लेकर क्यों नहीं देखने को मिली है? आज आदिवासी विद्यालय का उदास-बेजान माहौल, आदिवासियों की शिक्षा का माध्यम और उसे स्वीकार करने का द्वंद्व, अपनी मातृभाषा में शिक्षा हासिल नहीं करने की स्थिति अनेक सवाल पैदा करती है। आदिवासी विद्यालयों के संचालन या प्रबंधन को किसी के हाथों में सौंपना ही था तो नमूने के तौर पर चरणबद्ध हस्तांतरण करने में दिक्कत क्या थी? पेसा लागू करने का रंगारंग उत्सव मनाने वाली राज्य सरकार ग्राम सभाओं को इस तरह के हस्तांतरण शामिल करने से क्यों बचती रही है? आदिवासी मतलब अनुसूचित जनजाति की समझदारी का दायरा बड़ा है। जनजातीय लोगों ने राज्य की आबोहवा की हिफाजत और जंगलों को बचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। अगर पेसा कानून ने सालों पहले ग्राम सभा को सामुदायिक संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण का अधिकार दिया है तो फिर शिक्षा से इन नागरिक संकायों को जोड़ने की बात क्यों नहीं की गई? क्या सरकार को ग्राम सभा पर भरोसा नहीं? फिर पेसा कानून में वनों की सुरक्षा और संरक्षण का भी अधिकार ग्राम सभा को देने की बात क्यों हुई?

अगर राज्य सरकार ने सामुदायिक वन प्रबंधन समितियों के गठन की जिम्मेदारी ग्राम सभा दी है तो उनके लिए विद्यालय चलाना कौन-सी बड़ी बात है? जब आदिवासी इलाकों में ग्राम सभाएं अपने स्थानीय विकास के लिए खुद योजनाएं बना रही हैं तो विद्यालय क्यों नहीं संभाले जा सकते हैं? फिर शिक्षा से जुड़े इस फैसले के अपने निहितार्थ होंगे, इस बात से कोई इंकार कर सकता है? मध्य प्रदेश में आदिवासियों को लेकर उम्दा माहौल बताया जा रहा है। राज्य भर में जनजातीय विद्यार्थियों के लिए आश्रम, छात्रावास, शालाएं, कन्या शिक्षा परिसर संचालित किए जा रहे हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रशिक्षण के लिए अनेक तरह की प्रोत्साहन योजना संचालित हो रही हैं। स्वरोजगार के लिए कौशल विकास के केंद्र भी संचालित किए जा रहे हैं। आदिवासी विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी राज्य सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है।

बालासोर रेल हादसे से उपजते सवाल समय रहते ही मांग रहे दो टूक जवाब ताकि थमें ऐसी रेल दुर्घटनाएं

सम्भवतया सदी के सबसे बड़ा रेल हादसा समझा जाने वाला बालासोर (उड़ीसा) भीषण ट्रेन हादसा ने देश-दुनिया वासियों को हिलाकर रख दिया है। गत शुक्रवार को हुए इस हादसे में जहां 288 लोगों की मौत हो चुकी है, वहीं 1175 यात्रियों के घायल होने की खबर है। आने वाले दिनों में मृतकों के आंकड़े बढ़ भी सकते हैं। इस रेल दुर्घटना के बाद 90 ट्रेनों के रद्द होने और 46 ट्रेनों के मार्ग परिवर्तन से इस रेलमार्ग के महत्व का पता चलता है। इसलिए ऐसे सभी रेल मार्गों को और अधिक सुरक्षित व सुविधापूर्ण बनाये जाने की जरूरत है। वाकई इस हृदय विदारक घटना से कई सवाल उपज रहे हैं, जिसके जवाब यदि समय से मिल जाए तो भविष्य में ऐसे लोमहर्षक हादसे थम सकते हैं। पहला सवाल है कि सरकारीकरण और निजीकरण की दुविधा में पड़े भारतीय रेलवे ने समय रहते ही इस महत्वपूर्ण रेलखंड पर 'कवच प्रणाली' का उपयोग क्यों नहीं किया, जो कि ऐसे रेल हादसों को रोकने में सक्षम बताये जाते हैं। जानकारों का कहना है कि इस मार्ग पर कवच प्रणाली उपलब्ध नहीं थी। क्योंकि जब लोको पायलट सिग्नल तोड़कर बढ़ता है तो 'कवच' सक्रिय हो जाता है। जब एक मार्ग पर निर्धारित दूरी के अंदर अन्य ट्रेन होने का संकेत मिलता है तब यह प्रणाली सतर्क करती है और ट्रेन को स्वतः रोक देती है। दूसरा सवाल है कि सरकारीकरण बनाम निजीकरण की चक्की में पिस रहे आम आदमी को गुणवत्तापूर्ण व्यवस्थागत सेवाएं आखिर कब तलक मिलेंगी, क्योंकि मीडिया रपटों से पता चलता है कि सिस्टम के निजीकरण के चलते सिर्फ रेलवे ही नहीं बल्कि अधिकांश क्षेत्रों में जहां उपभोक्ताओं को पहले से ज्यादा भुगतान करना पड़ रहा है, वहीं सेवागत गुणवत्ता में या तो कमी आई है या फिर नदारत बताई जाती है। आखिर ऐसा क्यों है और इसके लिए जिम्मेदार अधिकारियों की नकेल कसने में हमारा राजनीतिक नेतृत्व विफल क्यों प्रतीत हो रहा है?

तीसरा सवाल है कि क्या इस हादसे के तुरंत बाद दिखाई दिए सरकारी राहत एवं बचाव के उपायों को और अधिक बेहतर व प्रासंगिक बनाने के लिए पहले से ही नीतियां क्यों नहीं बनाई जाती हैं, क्योंकि जब भी ऐसे हादसे कहीं होते हैं तो आसपास उपलब्ध आपात नागरिक सुविधाएं कमतर प्रतीत होने लगती हैं। क्या अब भी सरकार चेतेगी और प्रत्येक 100-150

किलोमीटर के दायरे में माकूल इंतजाम करने की रणनीति बनाएगी, ताकि आम दिनों में ऐसी सुविधाएं आमलोगों के काम आएं और आपातकालीन परिस्थितियों में किसी भी घटना से पीड़ित व्यक्तियों के काम आए। क्योंकि रेल व सड़क हादसे और बर्बर संघर्ष इस देश की नियति बन चुकी है।

चतुर्थ सवाल है कि विपक्ष द्वारा परम्परागत रूप में रेल मंत्री के इस्तीफे की मांग तो की जा रही है, लेकिन इन्हें शर्म नहीं आती कि देश पर लगभग 5 दशक तक शासन करने वाली कांग्रेस और उसके पिछलग्गुओं ने भारतीय रेल, सड़क व वायु परिवहन को दिया क्या है? किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सुदूर इलाकों में कितनी स्वास्थ्य सुविधाएं व अन्य जनसुविधाएं विकसित की थीं। इन्होंने किसी बड़ी घटना के बाद मंत्रियों से इस्तीफे तो ले लिए, लेकिन उसके बाद भी जनहित में ठोस उपाय क्यों नहीं किये। अन्यथा आज देश और अधिक विकसित व सुव्यवस्थित होता। सच कहूं तो जिस विपक्षी अराजकता को उन्होंने बढ़ावा दिया, उसका दुष्परिणाम आजतक देश व देशवासी दोनों भुगत रहे हैं।

पंचम सवाल है कि इस हादसे के पीछे दुर्घटना की वजह पर रेलवे की दो रिपोर्ट सामने आई है। एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कोरोमंडल एक्सप्रेस के लिए ग्रीन सिग्नल था, फिर भी यात्री ट्रेन लूप लाइन में घुसकर बहनागा बाजार स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी से टकरा गई, जिससे इसके डिब्बे दूसरी पटरी पर गिर गए। जिससे यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। यानी कि रेल सिग्नल में गड़बड़ी का अनुमान लगाया जा रहा है। वहीं, दूसरी रिपोर्ट में बताया गया है कि यशवंतपुर-हावड़ा एक्सप्रेस के डीरेल होने यानी पटरी से उतरने के कारण कोरोमण्डल और मालगाड़ी हादसे की शिकार हुई। इसलिए सरकार का यह कर्तव्य बनता है कि वह दुविधा भरी बातों को तरजीह देने की प्रशासनिक अभ्यस्तता पर नजर रखे और सटीक निर्णयों तक पहुंचने की मंशा रखे, ताकि ऐसी हृदयविदारक घटनाएं रुकें।

षष्टम सवाल है कि क्या मौजूदा सरकार विभिन्न औपचारिकताओं से ऊपर उठकर कुछ ऐसे ठोस उपाय करेगी, ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं पर काबू पाया जा सके। क्या वह अपनी व्यवस्था को इतनी ठोस और वैज्ञानिक बनायेगी, ताकि ऐसी अप्रत्याशित दुर्घटनाएं कभी हों ही नहीं। बहरहाल, इस हादसे की जो उच्चस्तरीय जांच शुरू हो चुकी है, वह जल्द मुकाम पर पहुंचे। भारतीय रेलवे के प्रवक्ता अमिताभ शर्मा के मुताबिक, जांच समिति की अध्यक्षता दक्षिण-पूर्वी प्रखंड के रेलवे सुरक्षा आयुक्त ए एम चौधरी कर रहे हैं। इसलिए उम्मीद की जाती है कि वह जल्द ही दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे। क्योंकि शुक्रवार की शाम कोरोमण्डल एक्सप्रेस और बेंगलुरु-हावड़ा एक्सप्रेस के पटरी से उतरने और मालगाड़ी से टकराने से हुआ यह हादसा इतना भीषण था कि ट्रेन की बोगियां एक के ऊपर एक चढ़ गईं और कुछ बोगियां जमीन के भीतर धंस गई थीं, जिसके दृष्टिगत कोच को काटकर शव निकालने पड़े।

प्रभारी मंत्री रविंद्र जायसवाल ने लिया ताड़ीघाट मऊ रेल रूट के निर्माण का जायजा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डीम प्रोजेक्ट में शुमार 51 किलोमीटर लंबी ताड़ी घाट मऊ नई रेल विस्तारीकरण परियोजना के पहले चरण का निरीक्षण मंगलवार को प्रदेश के राज्य मंत्री रविंद्र जायसवाल ने किया। और अब तक के हुए कार्यों के समीक्षा भी किया। इस दौरान उन्होंने इस परियोजना को नवंबर 2023 तक हर हाल में पूरा करने के निर्देश दिए ताकि नए साल में प्रधानमंत्री अपने हाथों से इस परियोजना को देश के नाम समर्पित कर सकें। प्रभारी मंत्री वाराणसी सर्किट हाउस से आज सड़क मार्ग द्वारा गाजीपुर सर्किट हाउस पहुंचे। वहा से सीधे घाट स्टेशन स्थित आरवीएनएल के गेस्ट हाउस गए जहां इंजीनियरों ने प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रेजेंटेशन दिया। उसके बाद ट्राली और पैदल चलकर रेल सह सड़क पुल का अवलोकन किया। इस मौके पर प्रभारी मंत्री रविंद्र जायसवाल ने कहा कि आज हम लोग विकास को तीर्थ मानते हैं। केवल मंदिर मस्जिद ही तीर्थ नहीं है बल्कि विकास का मॉडल तीर्थ स्थान है। यह कहा कि जब विकास होता है तो आम जनता, देश का भला होता है। इस निरीक्षण का उद्देश्य पूरे देश भर में समय से निर्माण कार्य पूरा हो है। उन्होंने कहा कि हम विकास का दर्शन करते हैं इसका भाव यह है कि जब यह समय से निर्माण होगा तो देश को समर्पित होगा, तो देश को लाभ होगा। तत्कालीन सांसद विश्वनाथ सिंह गहमरी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनके मांग पर ही पटेल आयोग का गठन हुआ। इसके बाद इस महत्वपूर्ण परियोजना का शुभारंभ हुआ जो अब बहुत जल्द जनता को समर्पित की जाएगी। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सपना सिंह, जिलाधिकारी आर्यका अखौरी, पूर्व विधायक सुनीता सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष सरिता अग्रवाल, जीपीटी इंफ्रा प्रोजेक्ट के वॉइस प्रेसिडेंट अश्वनी कुमार, उप जिलाधिकारी सदर प्रतिभा मिश्रा, सीओ विजय भूषण मौर्य, आरवीएनएल के पीडी जीवेश ठाकुर, डिप्टी मैनेजर रितेश कुमार, मैनेजर पीके सिंह, सुनील सिंह, अजय राय आदि मौजूद रहे।

गरीबों की जमीन हड़पने वाले भू माफियाओं के विरूद्ध होगी कड़ी कार्यवाही

प्रखर मिजार्पुर। गरीबो की जमीन साजिश के तहत हड़पने वाले भू माफियाओं के विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जायेगी। भू माफियाओं के साथ संलिप्त अधिकारियों, कर्मचारियों के विरूद्ध भी एफ0आई0आर0 दर्ज कराते हुये विभागीय कार्यवाही की जायेगी। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल ने आज भू माफियाओं से मिलकर गरीबो की जमीन हड़पने में संलिप्त पाये जाने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों पर कड़ी कार्यवाही की गयी हैं। जिसकी जानकारी कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेस वार्ता के दौरान जिलाधिकारी ने प्रेस प्रतिनिधियों को दी। उन्होने विस्तृत जानकारी देते हुये बताया कि श्री शशांक शेखर गिरी पुत्र स्व0 राजेन्द्र गिरी निवासी शिवपुर उर्फ रसूलपुर, पोस्ट विन्ध्याचल, थाना विन्ध्याचल, जिला मीरजापुर द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र में उल्लेख किया गया है कि मीजा शिवपुर उर्फ रसूलपुर की आराजी नं0-611 व आनं0-612 मि0 खाता संख्या 137 पर अन्य खातेदारों के साथ मुसम्मात भगवन्ती देवी पत्नी स्व0 बैजनाथ के स्थान पर विपक्षी द्वारा बतौर साजिशन लेखपाल को प्रभाव में लेकर कूटरचित साक्ष्यों के आधार पर वरासत का आदेश कराकर दूसरे के नाम दर्ज करा लिया गया है। इससे कतिपय भू-माफियाओं द्वारा कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रकरण की जाँच उप जिलाधिकारी सदर, मीरजापुर से कराई गयी। उप जिलाधिकारी सदर द्वारा प्रस्तुत जाँच में इनकी शिकायत सही पायी गयी। तत्क्रम में संबंधित लेखपाल, रजिस्ट्रार कानूनगो, नायब तहसीलदार व संबंधित भू-माफियाओं के विरुद्ध थाना विन्ध्याचल में अभियोग पंजीकृत कराकर प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। श्री लालता व बच्चालाल पुत्रगण स्व0 दुलारे निवासी पटेहरा कलाँ, तहसील मड़िहान, जनपद मीरजापुर द्वारा इस आशय की शिकायत की गयी कि कतिपय भू-माफियाओं व संबंधित लेखपाल द्वारा फर्जी कूटरचित साक्ष्यों के आधार पर किसी अन्य व्यक्ति के नाम वरासत कराकर लेखपाल द्वारा अपने पुत्र के नाम जमीन खरीद लिया गया।

रामनगर/विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा ने मनाया, गौरक्ष पीठाधीश्वर योगी जी का जन्मोत्सव

रामनगर। गौरक्ष पीठाधीश्वर परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज का जन्मदिन रामनगर शास्त्री चौक पर विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा प्रकोष्ठ के तत्वधान में धूमधाम से मनाया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ गौ रक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश मिडिया प्रभारी संदीप श्रीवास्तव ने महाराज जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर एवं मिष्ठान वितरण कर किया और उन्होंने कहा कि महाराज जी पूरे मनोयोग और समर्पण के साथ, उत्तर प्रदेश को एक विकसित राज्य बनाने के लिये काम कर रहे है। उन्होंने प्रदेश में इसका धरातल तैयार कर दिया है। उनकी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आज हर एक प्रदेश वासी को मिल रहा है। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखें एवं दीघार्यु करें।इस अवसर पर विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा के संभाग प्रभारी अनुराग चतुवेर्दी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यकाल में गुंडाराज एवं माफिया राज दफन हो चुका है, जिससे प्रदेश की जनता सुकून महसूस कर रही है।वही रामनगर गौ रक्षा प्रकोष्ठ के नगर अध्यक्ष आशीष गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि आज योगी राज में हमारी बहन - बेटियां खुद को सुरक्षित महसूस कर रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कार्तिक सिंह ने बताया कि महाराज जी के अगुवाई में उत्तर प्रदेश एक सर्वोत्तम प्रदेश बन रहा है।कार्यक्रम में विश्व हिंदू महासंघ के वाराणसी मंडल प्रभारी तपेश्वर चौधरी, संभाग प्रभारी दिनेश,गौ रक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश मिडिया प्रभारी संदीप श्रीवास्तव, संभाग प्रभारी अनुराग चतुवेर्दी, नगर अध्यक्ष आशीष गुप्ता, मनोजयादव,सुनील सिंह, गणेश,नागेंद्र सिंह,कार्तिक सिंह, शेरू, बबलू साहनी, आकाश साहनी ऊर्फ छोटू,सत्यम, सुभाष यादव मुन्ना डाक्टर,विपिन चौहान और दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आजाद शिक्षा केंद्र ने रैली निकालकर नगर पंचायत खेतासराय को दी धमकी

प्रखर खेतासराय (जौनपर)। पर्यावरण दिवस पर सोमवार को लोकतंत्र बचाव अभियान के तहत आजाद शिक्षा केंद्र ने कस्बे में रैली निकालकर जागरूक किया। मनेछा स्तिथ ताल पर सांकेतिक धरना सभा कर नगर पंचायत खेतासराय से कड़ी आपत्ति जताई। ईओ को चेताया गांव की विशालकाय तालाब पर कूड़ा फेंकना बंद किया जाय अन्यथा जिलाधिकारी का घेराव कर उन्हें ज्ञापन सौपेंगे । मुख्यमंत्री के यहाँ भी प्रकरण को ले जाएंगे। संस्था प्रमुख निसार अहमद खान के नेतृत्व में संगठन से जुड़े कार्यकर्ता सोमवार की दोपहर तकिया मुहल्ले से निकले । मुख्य मार्ग शाहगंज- जौनपुर से निकली यह रैली मनेछा स्तिथ मनागताल पहुँचकर धरना सभा मे तब्दील हो गई । इस दौरान तख़्ती पर लिखे स्लोगन के साथ विभिन्न प्रकार के नारा बाजी करते हुए चल रहे थे। धरना सभा को संबोधित करते हुए अध्यक्ष निसार अहमद खान ने कहा कि इस महत्वपूर्ण तालाब पर नगर पंचायत का कूड़ा फेंकने की वजह से पानी प्रदूषित हो जा रहा है, नाला जाम होने की वजह से जलनिकासी भी प्रभावित हो रही है । मॉडल तालाब व सुंदरीकरण के लिए एसडीएम को ज्ञापन दिया गया था लेकिन अभी उनकी तरफ से कोई पहल नही हुई । यदि नगर पंचायत ने अविलंब नगर का कूड़ा फेकना बन्द नही किया तो जिलाधिकारी का घेराव कर आंदोलन करने के बाध्य होंगे। मुख्यमंत्री से भी शिकायत की जाएगी। इस सांकेतिक धरने पर संगठन के कार्यकताओं के साथ साथ बड़ी संख्या में ग्रामीण भी शामिल हुए। इस अवसर पर प्रमुख रूप से बृजेश यादव, रामभवन बिंद, रामनारायण बिंद, राम नारायण यादव, रोहिल्ला, अमीनुद्दीन, ज्योतिका, वीनू, रीमू, नीतू कुशाग्री, विवेक, सौरव समेत अन्य लोग शामिल रहे।

डीप टी .एम .एस. (Deep T.M.S) मशीन असाध्य मानसिक रोगो की चिकित्सा के लिए एक वरदान - डॉ. वेणु गोपाल झंवर

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। मानसिक बीमारियों में आज भी 40% बीमारियां ऐसी है जो कि दवाइयों या चिकित्सा से ठीक नहीं होती` गंभीर मानसिक बीमारियां जैसे डिप्रेशन, ओ.सी.डी. एंजाइटी, सिजोफ्रेनिया के पुरे तरह ठीक नहीं होने से व्यक्ति परिवार और समय पर बोझ बन जाता है इसी समस्या को हल करने हेतु विज्ञान निरंतर प्रयासरत रहती है` मैग्नेटिक स्टिमुलेशन यद्यपि 1980 से ही प्रचलित है लेकिन इजराइल की ब्रैनसवे कंपनी ने ये मशीन तैयार करके असाध्य मानसिक रोगो की चिकित्सा के लिए एक वरदान दिया है` इस मशीन को डीप टी .एम .एस. (Deep T.M.S) कहते है निम्नलिखित बीमारियों में 80% से अधिक कारगर है जैसे डिप्रेशन (Depression), ओ. सी. डी (OCD), धूम्रपान की लत (Smoking addiction), अन्सियस डिप्रेशन (Anxious depression), मोटापा (obesity), स्किजोफ्रेनिआ (Schizophrenia), अल्झाइमर डिजीज (Alzhiemer disease), आटिज्म (Autism), बाइपोलर डिसऑर्डर, क्रोनिक पेन, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, पार्किंसन डिजीज, पोस्ट- स्ट्रोक रिहैबिलिटेशन, पोस्ट- ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर उत्तर प्रदेश में यह पहली मशीन है `देवा इंस्टिट्यूट ऑफ हेल्थ केयर एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड देवा मेन्टल हेल्थ केयर ने पूर्वांचल एवं आस पास के मरीजो के लिए ये सुविधा बहुत ही कम दामों में शुरू कर दी है ताकि अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सके` पत्रकार वार्ता के दौरान, डॉ, वेणु गोपाल झंवर, निदेशक एवं मुख्य परामर्शदाता देवा मेन्टल हेल्थ केयर ने बताया की Deep T.M.S मशीन का उद्घाटन 7 जून 2023 को 11 बजे कौशल राज शर्मा मंडलायुक्त वाराणसी के करकमलो द्वारा होगा।

मुख्यमंत्री योगी के 51 जन्मदिन पर एमएलसी विशाल सिंह चंचल ने लगाया रक्तदान शिविर

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय एवं यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 51 वें जन्मदिवस पर विधान परिषद सदस्य विशाल सिंह चँचल की ओर से सोमवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। गाजीपुर जिला अस्पताल के ब्लड डोनेट सेंटर पर रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। जिसमे बड़ी संख्या में लोगो ने रक्तदान किया।एमएलसी विशाल सिंह चँचल की ओर से आयोजित इस ब्लड डोनेट कैम्प में जिले के तमाम जिला पंचायत सदस्यों, क्षेत्र पंचायत सदस्यों, ग्राम प्रधानों समेत बड़ी संख्या में युवाओं ने रक्त दान किया। इस दौरान बीजेपी कार्यकत्ताओं ने रक्तदान कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उज्ज्वल भविष्य और दीघार्यु होने की कामना की।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिवस के अवसर पर एमएलसी विशाल सिंह चँचल के समर्थकों ने रक्तदान कर मुख्यमंत्री के दीघार्यु होने की कामना की। रक्तदान के बाद एमएलसी समर्थकों ने मेडिकल कालेज परिसर में वृक्षारोपण भी किया। इस दौरान बीजेपी कार्यकत्ताओं में खास उत्साह नजर आया। इस अवसर पर एमएलसी प्रतिनिधि डॉ प्रदीप पाठक, हिमांशु सिंह, मन्नू सिंह, अरविंद सिंह झबसू,अमित नागवंशी, राकेश सिंह अंशु, अशोक सिंह झब्बल, बंगाली यादव, प्रीतम पासवान, आलोक तिवारी पंकज,उमेश सिंह,मो इमरान,पीयूष पांडेय, अमित सिंह भदौरा, नरेंद्र गुप्ता, विशाल चौरसिया, मो जिया,शिव प्रकाश राय आदि बड़ी संख्या में जिला पंचायत सदस्यगण, ग्रामप्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्यगण, एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

बिजेथुआ महावीरन संपर्क मार्ग पर बने बड़े-बड़े जानलेवा गड्ढे

प्रखर जौनपुर। सुईथाकला विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत जमौली चौराहे से बिजेथुआ महावीरन मार्ग बड़े-बड़े जानलेवा गड्ढों में तब्दील हो गया है जिससे बाबा बजरंगबली के श्रद्धालुओं छात्रों तथा आम राहगीरों के साथ दुर्घटना की संभावना पूर्ण रूप से बरकरार है . आए दिन इस मार्ग में बड़े-बड़े गड्ढे बन जाने के कारण दुर्घटना होना आम बात साबित हो रही है . सरकार बेशक शहरी क्षेत्रों में तथा हाईवे बनाने में पूरी तरह से सफल है और सड़कों की गुणवत्ता अच्छी है किंतु गड्ढा मुक्ति की हकीकत देखना हो तो आप सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में देख सकते हैं . यह बात पूर्ण रूप से सच है इस सच्चाई को यह मार्ग बयां कर रहा है.बिजेथुआ महावीरन सुल्तानपुर तथा जौनपुर जनपद के सीमा पर स्थित है.यह पवित्र पावन धाम पूरे प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश की आस्था का प्रमुख केंद्र है. बिजेथुआ महावीरन संपर्क मार्ग जमौली चौराहे बिरैली होते हुए सूरापुर -ढकवा प्रतापगढ़ मार्ग को जोड़ता है.मंदिर परिसर में मंगलवार और शनिवार को मेला लगता है जहां हजारों -लाखों की तादाद में लोग इकट्ठा आस्था और श्रद्धा की डुबकी लगाते हैं . इसी मार्ग से होकर हजारों श्रद्धालु और भक्त आते जाते हैं .यह ऐतिहासिक और पौराणिक धर्म स्थली है जहां हनुमान जी ने संजीवनी बूटी के लिए जाते समय इसी स्थान पर कालनेमि का वध किया था.इस सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे बनने से दुर्घटना की संभावनाएं निरंतर बनी हुई है. लोगों की आस्था धर्म भक्ति और श्रद्धा बनी रहे इसके लिए हजारों लोगों की जीवन की सुरक्षा के लिए नई सड़क बनना जनहित में है.इसके अतिरिक्त गांधी स्मारक विद्यालय संकुल समोधपुर, एसवीडी गुरुकुल महाविद्यालय समेत दर्जनों विद्यालय के हजारों छात्र- छात्राओं का आवागमन इसी मार्ग से होता है . कई फीट गहरे भयंकर गड्ढे छात्र-छात्राओं और हनुमान जी के भक्तों के साथ साथ आम राहगीरों की मौत को भी आमंत्रण दे रहे हैं जिसको लेकर जौनपुर जिला प्रशासन गंभीर नहीं है.वर्षों से जर्जर सड़क अब मरम्मत के लायक नहीं है बल्कि क्षेत्रीय लोगों की लंबे समय से नई सड़क बनाने की मांग है. क्षेत्र के लोगों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग किया है कि इस सड़क की जांच स्वयं जिलाधिकारी करें ताकि श्रद्धालुओं ,छात्र-छात्राओं और आम राहगीरों की जान को खतरे से बचाने के लिए आवागमन में हो रही बाधा को दूर करने की कृपा करें.जमौली - बिरैली मार्ग जानलेवा गड्ढों में इस तरह से तब्दील हो गया है कि राहगीर इस मार्ग से होकर जाने से कतराते हैं. इस मार्ग से न होकर कई किलोमीटर दूर से घूम कर अपने गंतव्य स्थल को पहुंचते हैं. लोगों ने इसे देश हित और समाज हित तथा आम जनमानस का हित समझते हुए इस मार्ग का जल्द से जल्द निर्माण कराने के लिए जिलाधिकारी व संबंधित विभाग को निर्देशित करने और एक उच्च स्तरीय जांच कमेटी गठित करने के लिए आदेशित करने की मांग की है. आम जनता ने आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास किया है कि उनकी मांग को अत्यंत गंभीरता से लिया जाएगा और समस्या का समाधान अवश्य किया जाएगा ताकि सरकार और प्रशासन गड्ढा मुक्ति के दावों पर पूर्ण रूप से खरा उतर सके. पीडब्ल्यूडी के सहायक अभियंता एपी यादव ने बताया कि मार्ग के टेंडर की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है.सड़क का निर्माण कार्य विशेष मरम्मत हेतु स्वीकृत है.जल्द से जल्द इसका कार्य शुरू कराया जाएगा।

आंधी के झोंके से सड़क पर गिरे पेड़ और खंभे, 20 घंटे से विद्युत आपूर्ति ठप

प्रखर खुटहन (जौनपुर) विद्युत उपकेंद्र के पास खुटहन वाया पट्टीनरेंद्रपुर मार्ग पर सोमवार की रात आयी आंधी में कई पेड़ और विद्युत खंभे सड़क पर गिर गये। रात भर सड़क मार्ग बंद रहा।दूसरे दिन सुबह जेसीबी से पेड़ हटाया गया। वहीं खंभा गिरने से पट्टी नरेंद्रपुर फीडर की आपूर्ति बंद कर दी गई। 20 घंटे से अधिक समय बीत जाने के बाद भी आपूर्ति चालू नहीं हो सकी। शाम को हल्की बारिश के साथ तेज हवाएं आंधी के झोंको में बदल गई। चौराहे पर दुकानों के सामने लगे टीनसेड के पतरे उड़ने लगे। सड़क के बगल कई पेड़ उखड़ कर मार्ग पर आ गिरे। जिससे रात भर रास्ता अवरूद्ध रहा। पावर हाउस के पास दो खंभे सड़क पर गिर गये। जिसके चलते पूरे फीडर की बिजली काट दी गई। आपूर्ति ठप कर दिए जाने से सैकड़ों कनेक्शनधारी तमाम परेशानियां झेल रहे हैं। उपकेंद्र पर तैनात एससओ का कहना है कि सभी फीडरो से आपूर्ति क्षेत्रों में आयी खामी को सुधारने के लिए तेजी से काम चल रहा है। शाम तक आपूर्ति चालू कर दी जायेगी।

संक्षिप्त खबरें

22 जून तक चलेगा दस्त नियंत्रण पखवाड़ा

प्रखर मिजार्पुर। जिले में 22 जून तक दस्त नियंत्रण पखवाड़ा चलाया जायेगा। अभियान के लिए विभागीय स्तर पर तैयारी पूर्ण कर ली गई। इस आशय की जानकारी मंगलवार को सीएमओ कार्यालय स्थित विवेकानन्द सभागार में बैठक के दौरान कही। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि दस्त से दस्त से होने वाली शिशु मृत्यु दर को शून्य स्तर तक लाने के उद्देश्य से व डायरिया से बचाव के लिए जिले में सात जून से 22 जून तक सघन दस्त पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। पखवाड़े के दौरान संबंधित क्षेत्र की आशा कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में घर.घर जाकर पांच वर्ष तक के सभी बच्चों के बीच ओआरएस पैकेट बांटेगी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने बताया की पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की सूची आशा कार्यकताओं को उपलब्ध करा दिया गया है। जिसके आधार पर पखवाड़े के दौरान पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के घरों में प्रति बच्चा एक.एक ओआरएस पैकेट का वितरण किया जाएगा। अभियान के लिए विभाग की ओर से सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों, स्वास्थ्यकर्मियों समेत सभी आशा कार्यकताओं को भी पत्र जारी कर अवगत करा दिया गया। जिला कार्यक्रम प्रबन्धक अजय सिंह ने बताया की जून में आयोजित होने वाले दस्त नियंत्रण पखवाड़े का उद्देश्य जिले में दस्त के कारण होने वाली शिशु मृत्यु दर का स्तर शून्य पर लाना है। डायरिया से होने वाले मृत्यु का मुख्य कारण निर्जलीकरण के साथ इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होना है। ओआरएस और जिंक के प्रयोग के द्वारा डायरिया से होने वाले मृत्यु को टाला जा सकता है। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर मुकेश ने बताया कि सघन दस्त नियंत्रण पखवाड़े के दौरान अंतर विभागीय समन्वय द्वारा दस्त की रोकथाम के उपायए दस्त होने पर ओआरएस और जिंक का प्रयोगए दस्त के दौरान उचित पोषण तथा समुचित इलाज के विभिन्न पहलुओं का क्रियान्वयन किया जाना है ।पखवाड़े के दौरान अति संवेदनशील क्षेत्र जैसे शहरी झुग्गी झोपड़ीए कठिन पहुंच वाले क्षेत्रए बाढ़ प्रभावित क्षेत्रए निर्माण कार्य में लगे मजदूरों के परिवारए ईंट भट्ठे वाले क्षेत्रए अनाथालय और ऐसे चिह्नित क्षेत्रए जहां दो.तीन वर्ष पहले तक दस्त के मामले अधिक संख्या में पाए गए हैंए उनको विशेष प्राथमिकता दिया जायेगा।

समस्त पुलिस चौकियों के प्रभारीगण की गोष्ठी कर मादक पदार्थों एवं पशुओं की तस्करी के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने सहित दिया गया आवश्यक दिशा-निर्देश

प्रखर मिजार्पुर। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा द्वारा बाह्य जनपदों के साथ सीमा साझा करने वाली जनपद मीरजापुर की समस्त पुलिस चौकियों के प्रभारीगण की गोष्ठी की गयी। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर द्वारा चौकी प्रभारीगण को जनपद की सीमाओं पर पशु तस्करी एवं मादक पदार्थों की तस्करी के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने तथा संदिग्ध व्यक्तियों वाहनों की सघन चेकिंग सहित अन्य आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये । इसी क्रम में चौकी प्रभारीगण के क्षेत्र में होने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी ली गयी तथा निस्तारण हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया।

प्रतिबंधित दोहरे की खुलेआम बिक्री का जिम्मेदार कौन

प्रखर जौनपुर। शहरी इलाके के मोहल्ला ओलांदगंज स्थित पकड़ी तिराहे के पास 50 मीटर की दूरी पर आधा दर्जन से अधिक लोग धड़ल्ले से प्रतिबंधित दोहरे की बिक्री कर रहे हैं। दोहरे के निमार्ताओं और बिक्री करने वाले लोगों को ना तो पुलिस का भय है और ना ही इस से संबंधित विभाग के लोगों का ही भय है। जिसमें अलग.अलग नामों से बिक्री होने वाले इस दोहरे को कोई चंडी तो कोई विष्णु और ना जाने कौन.कौन से देवी देवताओं का नाम रखकर इस प्रतिबंधित चीज को बेचा जा रहा है। माउथ कैंसर को बढ़ावा देने तथा तेजी से फैलाने वाले पदार्थ की बिक्री पर नगर वासियों की सुरक्षा हेतु जिला अधिकारी दिनेश कुमार सिंह ने प्रतिबंधित कर दिया । दोहरा विक्रेताओं द्वारा कई बड़ी अदालतों तक का दरवाजा खटखटा चुके लेकिन प्रशासन ने भी इस बात के लिए नकेल कस दिया था कि इसे किसी भी कीमत पर बढ़वा नहीं दिया जा सकता। लेकिन इधर कुछ माह से ओलांदगंज पकड़ी तिराहे के बाद लोग धड़ल्ले से? खुलेआम बेच रहे हैं। बिक्री आखिर किसके सह पर हो रही है खाद्य विभाग के लोग में चुप्पी साधे हुए हैं यह अपने में एक अलग सवालिया निशान है।

गंगा में डूबे बालकों के परिजनों को राज्यमंत्री ने दिया राहत राशि का चेक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गत 03 जून को गाजीपुर शहर क्षेत्र के पत्थर घाट पर गंगा नदी में डूबने से तीन युवको की मृत्यु हो गई थी। जिसमें 01 युवक की लाश अभी प्राप्त नही हो सकी है। 02 मृतको के परिजनो को आपदा मोचक निधि से 04-04 लाख की राहत राशि का चेक राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार स्टांप एवं न्यायालय शुल्क एवं पंजीयन विभाग उत्तर प्रदेश रविंद्र जायसवाल द्वारा हस्तगत कराया गया। इस मौके पर अध्यक्ष नगर पंचायत सपना सिंह, जिलाधिकारी आर्यका अखौरी, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद सरिता अग्रवाल, पूर्व विधायक जमानियां सुनीता सिंह, एवं अन्य पार्टी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Entertainment News

मालदीव में पति और बच्चों के साथ मस्ती करती दिखीं सनी लियोन

बॉलीवुड हसीना सनी लियोन इन दिनों चर्चाओं में हैं। हाल ही में सनी लियोन ने कान्स फिल्म फेस्टिवल में डेब्यू किया था। एक्ट्रेस के लुक की जमकर तारीफ हुई थी. अब सनी लियोन अपनी फैमिली के साथ मालदीव में क्वालिटी टाइम स्पेंड कर रही हैं। अपनी ट्रिप की बेहद खूबसूरत वीडियो सनी ने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर की है, जिसमें सनी लियोन पति डेनियल वेबर और अपने तीन बच्चों बेटी निशा और जुड़वां बेटों नूह और अशर के साथ पूल में मस्ती करती दिख रही हैं। आपको बता दें सनी लियोन इन दिनों कई प्रोजेक्ट्स में बिजी हैं। 6 हफ्ते की लंबी शूटिंग से समय निकालकर एक्ट्रेस परिवार के साथ छुट्टियों पर गई हैं। हाल ही में सनी लियोन की फिल्म केनेडी का कान्स फिल्म फेस्टिवल में प्रीमियर किया गया था।

आमिर से लेकर अक्षय तक, एक हिट के लिए तरस गए हैं ये बड़े सितारे

बॉलीवुड इंडस्ट्री में भले ही पिछले कुछ महीनों में फ्लॉप फिल्मों का सिलसिला कम हो गया है। लेकिन शाहरुख खान की पठान के ब्लॉकबस्टर होने के बाद अब कई सितारे एक हिट के लिए तरसते हुए नजर आ रहे हैं। सालों साल बॉलीवुड पर अपनी अदाकारी का सिक्का चलाने वाले बड़े-बड़े सितारे अब काफी वक्त से फ्लॉप फिल्में दे रहे हैं। इस लिस्ट में अक्षय कुमार से लेकर आमिर खान तक का नाम शामिल हैं।

आमिर खान

सुपरस्टार आमिर खान जिन्हें बॉलीवुड का मिस्टर परफेक्शनिस्ट भी कहा जाता है, वह काफी वक्त से एक हिट फिल्म की तलाश कर रहे हैं। पिछले पांच सालों से आमिर ने एक भी हिट फिल्म नहीं दी है। उनकी आखिरी फिल्म लाल सिंह चड्ढा ने उनका मन भी खट्टा कर दिया है। इस फिल्म की फ्लॉप के बाद आमिर एक्टिंग से थोड़ा दूर – दूर नजर आ रहे हैं।

अक्षय कुमार

अक्षय कुमार का अच्छा वक्त न जाने कब शुरू होगा। खिलाड़ी कुमार की फिल्मों तो काफी रिलीज होती हैं लेकिन बॉक्स ऑफिस पर उनका हाल बेहाल रहता है। अक्षय की फ्लॉप की लिस्ट अब काफी लंबी हो गई है। उनकी आखिरी फिल्म सेल्फी का भी सिनेमाघरों में बुरा हाल हुआ था। 175 करोड़ की फिल्म ने महज 16.85 करोड़ का कारोबार किया था।

प्रभास

साउथ स्टार प्रभास ने बाहुबली के बाद से एक भी हिट फिल्म नहीं दी है। हालांकि उनकी बड़ी फिल्में रिलीज हुई लेकिन कोई भी अच्छा कारोबार नहीं कर पाई। ऐसे में अब उन्हें आदिपुरुष से काफी उम्मीदें हैं। माना जा रहा है कि इस फिल्म के बाद से प्रभास का फ्लॉप फिल्में देने का सिलसिला खत्म हो जाएगा।

रणवीर सिंह

एक से बढ़कर और दमदार किरदार निभाने वाले रणवीर सिंह भी पिछले काफी वक्त से बॉक्स ऑफिस पर ठंडे साबित हो रहे हैं। रणवीर की पिछली 3 फिल्में सिनेमाघरों में नहीं चली। अब उन्हें भी अपनी अगली फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी से काफी उम्मीदे हैं।

रोमांस और इमोशनल का डबल डोज देगी कार्तिक-कियारा की सत्यप्रेम की कथा

कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की ब्लॉकबस्टर फिल्म भूल भुलैया 2 में दोनों की केमिस्ट्री लोगों बहुत पंसद आई हैं। जिसके बाद एक बार फिर दोनों की जोड़ी फिल्म सत्यप्रेम की कथा के साथ बड़े पर्दे पर आने वाली है। बीते दिनों फिल्म का टीजर रिलीज हुआ था, जिसे लोगों से बेशुमार प्यार मिला। टीजर रिलीज के बाद कल ट्रेलर के अनाउंसमेंट के लिए भी एक पोस्ट शेयर किया गया था। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की सत्यप्रेम की कथा का पहला गाना नसीब से कुछ दिनों पहले ही रिलीज हो चुका है। कार्तिक ने अपने पोस्ट में ट्रेलर रिलीज का टाइम भी बताया था। इंतजार खत्म। ट्रेलर में कार्तिक आर्यन को पत्नी की तलाश करते देखा जा सकता है और जब वह कियारा आडवाणी को देखता है तो उसे प्यार हो जाता है। जैसे ही वे अपनी प्रेम कहानी शुरू करते हैं और शादी करते हैं, कई सच्चाई सामने आती हैं जो उनका दिलों को तोड़ देती हैं। इससे पहले मई में निर्माताओं ने सत्यप्रेम की कथा का टीजर जारी किया था, जिसे प्रशंसकों से बहुत प्यार मिला था। दर्शकों को कार्तिक और कियारा की केमिस्ट्री और दिल छू लेने वाले गाने बहुत पंसद आए हैं। आपको बता दें कि सत्यप्रेम की कथा में गजराज राव और सुप्रिया पाठक भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 29 जून, 2023 को रिलीज होने वाली है।

न्यासा औरी के माता-पिता के साथ हुई स्पॉट

अजय देवगन और काजोल की लाडली बेटी न्यासा देवगन को पार्टी करना बहुत पसंद है। उन्हें अक्सर अपने बेस्ट फ्रेंड ओरहान अवात्रामणि यानी की औरी के साथ पार्टी करते हुए देखा जाता है। दोनों कभी साथ में लंदन के क्लब में पार्टी करते नजर आते हैं तो कभी अमेरिका के क्लब में नजर आते हैं। उनकी पार्टी की तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब वायरल होती रहती हैं। कई दफा लोगों ने ओरहान को उनका बॉयफ्रेंड समझ लिया था, लेकिन ओरहान और न्यासा बी-टाउन के BFF हैं। बता दें हाल ही में न्यासा को औरी के साथ डिनर डेट पर स्पॉट किया गया। इस डेट पर औरी के माता-पिता और उनके एक दोस्त भी मौजूद थे। इस डेट की तस्वीर औरी ने अपने सोशल मीडिया प्लॉटफॉर्म पर अपलोड की। लोग इस तस्वीर को देखकर अटकलें लगाने लगे कि कही औरी न्यासा को अपने घरवालों से ऑफिशयली मिलवाने तो नहीं लाया।

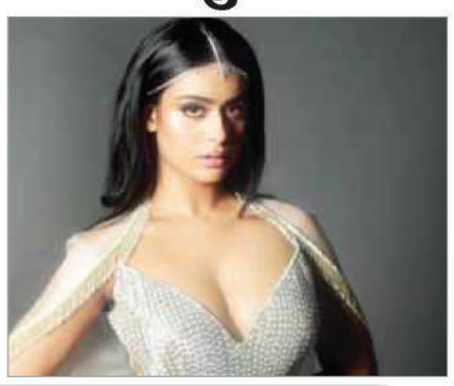

अपनी एक्टिंग से हर किसी को दीवाना बना चुकी है रम्भा

बॉलीवुड की कई हिट फिल्मों में काम कर चुकी रम्भा आज अपना 45वां जन्मदिन मना रही हैं। आप सभी को बता दें कि रम्भा ने बॉलीवुड और तेलगु दोनों ही भाषाओं की फिल्मों में काम किया है। अपने करियर की शुरुआत रम्भा ने फिल्म Aa Okkati Adakku से की थी जो एक तमिल फिल्म थी और इस फिल्म में रम्भा ने रम्भा का ही किरदार निभाया था और इस फिल्म के बाद उन्होंने कई हिट फिल्मों में काम किया। रम्भा को आप सभी ने पहली बार बॉलीवुड इंडस्ट्री में फिल्म जल्लाद में देखा होगा यह रम्भा की बॉलीवुड डेब्यू फिल्म रही थी और इस फिल्म के बाद वह जुर्माना, दानवीर, जंग, क़हर, जुड़वा, सजना, घरवाली बाहरवाली, बंधन, मैं तेरे प्यार में पागल, क्रोध, बेटी हश.1, दिल ही दिल में, जानी दुश्मनः एक अनोखी कहानी, प्यार दीवाना होता है, क्यों की... मैं झूठ नहीं बोलता, दूकानः पीला हाउस जैसी फिल्मों में नजर आई। सभी फिल्मों में इन्हे खूब पसंद भी किया गया। अब रम्भा फिल्मों में नजर नहीं आती, उन्होंने शादी कर ली हैं और उनकी दो बेटियां है जिनके साथ वह अक्सर ही एन्जॉय करते हुए नजर आती हैं। रम्भा ने बॉलीवुड में अपनी बहुत ही उम्दा पहचान बनाई और वह सलमान खान की एक्ट्रेस के नाम से भी पहचानी गई। फिल्मों में शानदार अभिनय की वजह से आज भी उनके लाखो फैंस हैं जो उन्हें पसंद करते हैं। फिलहाल रम्भा को हमारी तरफ से जन्मदिन की बधाइयां।

साउथ एशियन क्वीयर फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी सुरभि तिवारी की फिल्म पाइन कोन

साउथ से लेकर बॉलीवुड तक अपनी शानदार एक्टिंग से फैंस का दिल जीतने वाली एक्ट्रेस सुरभि तिवारी की अपकमिंग फिल्म 'पाइन कोन' का दक्षिण एशिया के सबसे बड़े क्वीयर फिल्म फेस्टिवल में प्रीमियर होगा। 7 जून यानी कल मुंबई इंटरनेशनल 'क्वीयर फिल्म फेस्टिवल' में इस फिल्म को दिखाया जाएगा।

ये फिल्म समलैंगिकता के मुद्दे पर बनी है, जिसमें एक्ट्रेस सुरभि काफी अहम रोल प्ले कर रही हैं। फिल्म में सुरभि का भाई समलैंगिक होता है। फिल्म 'पाइन कोन' के निर्देशक ओनिर हैं, जिन्होंने समलैंगिक संबंधों पर आधारित ये फिल्म बनाई है। फिल्म में सुरभि तिवारी की एक्टिंग की काफी तारीफ की जा रही है। उन्होंने फिल्म में एक यंग से लेकर बुजुर्ग महिला का किरदार निभाया है। 'पाइन कोन' में सुरभि तिवारी अपने भाई के खातिर किसी से भी भिड़ने को तैयार हैं और अपने भाई के समलैंगिक होने पर भी उसका साथ नहीं छोड़ती हैं। वह अपने भाई के लिए पूरे समाज के सामने खड़ी होती हैं।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने खोली बॉलीवुड की पोल, बोले- मुझे कॉलर से घसीटा

बॉलीवुड के दमदार एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी अपनी एक्टिंग से ज्यादा आज कल अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में हैं। आज एक्टर भले ही बड़े स्टार बन गए हों, लेकिन एक वक्त ऐसा था, जब वो छोट रोल्स में नजर आते थे। एक्टर्स बताते हैं कि शुरुआती दिनों में उन्होंने बहुत ज्यादा स्ट्रगल किया।

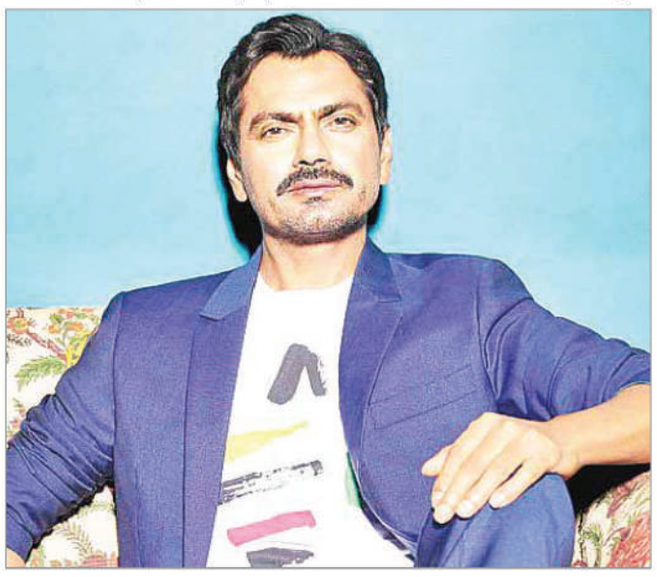

उन्होंने बॉलीवुड में होने वाले भेदभाव को भी झेला है। एक्टर ने खुद इस बारे में खुलासा किया है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने एक घटना का जिक्र करते हुए कहा कि उनको एक बार भेदभाव झेलना पड़ा। वो लीड एक्टर के साथ खाना खाने के लिए गए थे कि उन्हें कॉलर से पकड़कर घसीटा गया। उन्होंने बताया कि वो उन दिनों की बात है, जब वो स्ट्रगल कर रहे थे। उनके पास उन दिनों खाने के भी लाले होते थे।

ऐसा हुआ एक्टर के साथ भेदभाव

नवाजुद्दीन ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया, मैं स्पॉट बॉय से पानी मांगता था और वह मुझे पूरी तरह से अनदेखा कर देता था। फिर मैं खुद पानी लेने जाता था। बॉलीवुड में बहुत सारे प्रोडक्शन हाउस ऐसे हैं जो फिल्म की कास्ट और क्यू को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। कई जगह सब एक साथ खाते हैं, लेकिन कई जगह खाने के समय इन्हें सेग्रिगेट किया जाता है। जूनियर एक्टर अलग खाते हैं। सहायक कलाकारों को अलग खाना होता और लीड एक्टर्स को अलग तरह का खाना मिलता है। कई बार मैंने कोशिश की कि मेन एरिया में जाकर खाऊं, जहां लीड एक्टर्स खाते हैं, लेकिन वहां से कॉलर पकड़कर भगा दिया गया।

मांगे थे 50 रुपये उधार

नवाज ने एक और वाक्या बताते हुए कहा कि उन्होंने एक सीनियर एक्टर से 50 रुपये उधार मांगे थे। उन्होंने बताया कि उस सीनियर एक्टर के हालात भी ठीक नहीं थे। एक्टर की तरह उनकी हालत भी टाइट थी। सीनियर एक्टर के पास सिर्फ 100 रुपये थे, जिसमें से उन्होंने 50 रुपये नवाज को दिए। आगे एक्टर बताते हैं कि दोनों को एक-दूसरे की हालत पर तरस आ गई और दोनों ही रो पड़े।

एयरलाइंस इंडस्ट्री की इस वर्ष होगी बढ़िया कमाई

■ इस साल होगा 9.8 अरब डालर का लाभ ■ अर्थव्यवस्थाएं पटरी पर आने से सुधरा मुनाफा

इस्तांबुल (भाषा)।

आईएटीए ने सोमवार को कहा कि एयरलाइंस उद्योग को इस साल 9.8 अरब डालर का शुद्ध मुनाफा होने की उम्मीद है। यात्रियों की संख्या बढ़ने और विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के फिर से पटरी पर आने से उद्योग का प्रदर्शन सुधरा है।

अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) के महानिदेशक विली वाल्श ने कहा कि आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद लोग फिर से जुड़ने, संभावनाएं तलाशने और व्यापार करने के लिए उड़ान भर रहे हैं।

ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि यात्री यातायात 2019 के स्तर के 90 प्रतिशत से अधिक है।' उन्होंने यहां आईएटीए की वार्षिक आम बैठक में कहा कि हवाईअड्डों पर काफी यात्री हैं और होटलों में भी लोगों की संख्या बढ़ रही है, स्थानीय अर्थव्यवस्थाएं फिर से खड़ी हो रही हैं और एयरलाइंस उद्योग मुनाफे में आ गया है। विमानन उद्योग को इस साल 803 अरब अमेरिकी डालर की आय और 9.8 अरब अमेरिकी डालर का शुद्ध लाभ होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि एयरलाइंस प्रति यात्री औसतन 2.25 डालर कमाएगी। उन्होंने कहा कि विमानन उद्योग में महामारी के बाद सुधार हो रहा है, लेकिन अभी भी लागत दबाव और आपूर्ति-श्रृंखला में बाधा जैसी चुनौतियां हैं।

■ कारोबार करने वाले अब भर रहे हैं ज्यादा उड़ानें
■ एयर ट्रैफिक व होटल बिजनेस बढ़ा
■ वर्ष 2019 के मुकाबले 90% बढ़ा एयर ट्रैफिक
■ विमानन उद्योग की कमाई 803 अरब डालर हुई

भारतीय विमानन बाजार में व्यापक संभावनाएं

इस्तांबुल (भाषा)। एयरलाइन कंपनियों के संगठन आईएटीए के महानिदेशक विली वॉल्श ने सोमवार को कहा कि भारत के चमकते विमानन बाजार में व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं। आईएटीए प्रमुख वॉल्श ने यहां वार्षिक आमसभा की बैठक से इतर संवाददाताओं के साथ चर्चा में कहा कि भारत में विमानन क्षेत्र के भविष्य को लेकर वह काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, 'आईएटीए के संचालन मंडल में दो भारतीय एयरलाइंस के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) मौजूद हैं और ऐसा पहली बार हुआ है। यह भारतीय विमानन बाजार के चमकीले पक्ष और अवसरों को प्रदर्शित करता है।

एयर इंडिया के साथ काम कर रही लुफ्थांसा

इस्तांबुल (भाषा)। लुफ्थांसा समूह के सीईओ कार्स्टन स्पोर ने कहा है कि एयरलाइन समूह एयर इंडिया के साथ मिलकर काम कर रहा है और देश में अपने परिचालन का विस्तार कर रहा है। उन्होंने कहा, 'हमने भारतीय बाजार में अपनी स्थिति मजबूत की है। हमें लगता है कि हम अधिक कर सकते हैं।' आईएटीए की सालाना आम बैठक (एजीएम) और विश्व हवाई यातायात शिखर सम्मेलन के मौके पर उन्होंने कहा कि हमने अभी फ्रैंकफर्ट-हैदराबाद (उड़ान) को फिर से शुरू करने की घोषणा की है, जिसे हमें कुछ साल पहले बंद करना पड़ा था। हम पहली बार म्यूनिख से बैंगलोर की सेवा भी शुरू करेंगे।'

क्रिप्टो विनियमन पर भारत के अनुभव से लें फायदा

नई दिल्ली (भाषा)।

क्रिप्टो परिसंपत्तियों के विनियमन के उपायों पर एक वैश्विक अध्ययन में कहा गया कि भारत के अनुभव से फायदा लेना चाहिए। विश्व आर्थिक मंच की इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि अलग-अलग निगरानी और प्रवर्तन से लेकर विभिन्न तरह के वर्गीकरण तक, क्रिप्टो परिसंपत्ति के विनियमन के प्रयासों को कई तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि क्रिप्टो विनियमन के लिए पूर्ण वैश्विक समन्वय की स्थिति आदर्श होगी। इसमें आगे कहा गया कि क्रिप्टो परिसंपत्ति को विनियमित करने के लिए वैकल्पिक उपाय तलाशने चाहिए।

संक्षिप्त खबरें

आईटी निर्यात 31% बढ़ा

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार ने सोमवार को कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और आईटी संबद्ध सेवाओं (आईटीईएस) का उसका निर्यात 31.44 प्रतिशत बढ़कर 2,41,275 करोड़ रुपए हो गया। इससे पिछले वित्त वर्ष में यह आंकड़ा 1,83,569 करोड़ रुपए था। राज्य सरकार की एक रिपोर्ट में कहा गया है, 'तेलंगाना में आईटी व आईटीईएस निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 2,41,275 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। यह इससे पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 31.44 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।'

कार्स-24 की धूम

लखनऊ (वि.)। देश की जानी मानी आटोटेक कंपनी कार्स-24 ने पिछले 90 दिनों के दौरान यूपी में सेकेंड हैंड गाड़ियों की बिक्री में सौ फीसद शानदारी बढ़ोतरी दर्ज की है। राज्य में हजारों कारों कारों की खरीद-फरोख्त को आसान बनाकर कार्स 24 यूपी में सेकेंड हैंड गाड़ियों के सलए सबसे भरोसेमंद प्लेटफार्म बन गया है। वर्ष 2015 में लखनऊ में अपनी सेवा की शुरुआत करने के बाद कार्स 24 ने अपनी मौजूदगी को लगातार बढ़ाया है और आज कंपनी प्रदेश के 35 शहरों में परिचालन कर रही है। राज्य के आटोमोटिव मार्केट में कार्स 24 के विकास का श्रेय इनकी भरोसेमंद सेवा व बेहतरीन ग्राहक सेवा व बढ़ती मांग को दिया जा सकता है।

रुपया 29 पैसे टूटा

मुंबई। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में सोमवार को अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया 29 पैसे की गिरावट के साथ 82.68 (अस्थायी) प्रति डालर पर आ गया। दुनिया की अन्य प्रमुख मुद्राओं की तुलना में डालर के मजबूत होने से रुपए में गिरावट आई। अंतर बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.47 रुपया प्रति डालर पर खुला और कारोबार के अंत में अपने पिछले बंद भाव के मुकाबले 29 पैसे की गिरावट के साथ 82.68 प्रति डालर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान रुपए ने 82.45 प्रति डालर का उच्च स्तर छुआ और यह 82.68 प्रति डालर के निचले स्तर तक भी आया।

सोना 80 रुपए लुढ़का

नई दिल्ली। कमजोर वैश्विक संकेतों के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोमवार को सोने का भाव 80 रुपए टूटकर 60,400 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गया। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 60,480 रुपए प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ था। चांदी की कीमत भी 400 रुपये की गिरावट के साथ 73,000 रुपए प्रति किलोग्राम रह गई। दिल्ली सर्राफा बाजार में सोने की हाजिर कीमत 80 रुपए की गिरावट के साथ 60,400 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गई।(एजेंसियां)

मई में वाहनों की खुदरा बिक्री 10 फीसद बढ़ी

■ वाहन डीलरों के संगठन फाडा ने जारी किए आंकड़े

79 फीसद की बढ़त तिपहिया बिक्री में

10 फीसद हुई ट्रैक्टरों की बिक्री में वृद्धि

09 फीसद बढ़ी टू व्हीलर की बिक्री

07 फीसद ज्यादा बिके कामर्शियल व्हेकिल

04 फीसद बढ़ी यात्री वाहनों की बिक्री

नई दिल्ली (भाषा)।

आटो डीलरों के निकाय फाडा ने सोमवार को कहा कि यात्री वाहनों, दोपहिया और ट्रैक्टर सहित सभी खंडों में मजबूत मांग के कारण मई में वाहनों की खुदरा बिक्री 10 प्रतिशत बढ़ी।

आंकड़ों के मुताबिक पिछले महीने वाहनों की कुल बिक्री बढ़कर 20,19,414 इकाई हो गई, जो मई 2022 में 18,33,421 इकाई थी। मई में यात्री वाहनों की बिक्री चार प्रतिशत बढ़कर 2,98,873 इकाई हो गई, जो एक साल पहले इसी अवधि में 2,86,523 इकाई थी। फेडरेशन आफ आटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अध्यक्ष मनीष राज सिंघानिया ने कहा कि लंबित आर्डर सूची के साथ ही वाहनों की उपलब्धता बढ़ने तथा नई पेशकश से मांग मजबूत हुई।

दोपहिया की खुदरा बिक्री 9% बढ़कर 14,93,234 इकाई हो गई, जो मई 2022 में 13,65,924 थी। वाणिज्यिक वाहनों की खुदरा बिक्री सात प्रतिशत बढ़कर 77,135 इकाई रही। तिपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री में 79 प्रतिशत की जोरदार बढ़ोतरी हुई। ट्रैक्टर की बिक्री 10 प्रतिशत बढ़ी।

सीरम के खिलाफ पोस्ट सामग्री प्रथम दृष्टया मानहानि करने वाली : अदालत

मुंबई (भाषा)।

बंबई उच्च न्यायालय ने सोमवार को कहा कि वैक्सीन बनाने वाली प्रमुख कंपनी सीरम इंस्टीट्यूट आफ इंडिया (एसआईआई) के खिलाफ दो व्यक्तियों और उनके संगठनों द्वारा पोस्ट की गई सामग्री 'प्रथम दृष्टया मानहानि करने वाली' थी। अदालत ने इन सामग्रियों को डिलीट करने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति आर आई चागला की एकल पीठ ने भी उन्हें अस्थायी रूप से कंपनी के खिलाफ कोई पोस्ट करने से रोक दिया। एसआईआई ने दिसम्बर 2022 में कंपनी और उसकी कोविड-19 वैक्सीन कोविशील्ड के खिलाफ कथित रूप से गलत सामग्री पोस्ट करने पर दो व्यक्तियों और उनके संगठनों के खिलाफ 100 करोड़ रुपए के हर्जाने की मांग करते हुए मानहानि का मुकदमा दायर किया।

उच्च न्यायालय ने सोमवार को अपने अंतरिम आदेश में कहा कि वह प्रथम दृष्टया एसआईआई की इस बात से संतुष्ट है कि दोनों व्यक्तियों द्वारा पोस्ट की गई सामग्री मानहानि करने वाली है। अदालत बाद में अंतिम सुनवाई के लिए कंपनी के मुकदमे पर विचार करेगी।

सेवा क्षेत्र में 13 वर्षों की दूसरी सबसे बड़ी वृद्धि

■ अप्रैल के मुकाबले मई में गतिविधियों में गिरावट के बावजूद अच्छी वृद्धि

■ अप्रैल में इस क्षेत्र का सूचकांक 62 अंक था ■ मई में सूचकांक 61.2 अंक दर्ज किया गया

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत के सेवा क्षेत्र की वृद्धि मई में थोड़ी कम हुई, हालांकि इस दौरान पिछले 13 साल में दूसरी सबसे बड़ी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। एक मासिक सर्वेक्षण में सोमवार को कहा गया कि मांग की अनुकूल स्थिति और नए ग्राहकों की मदद से यह जीत हुई।

मौसमी रूप से समायोजित एसएंडपी ग्लोबल इंडिया सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक मई में 61.2 अंक पर रहा। यह आंकड़ा अप्रैल में 62 पर था। अप्रैल के मुकाबले मई में गतिविधियों में गिरावट के बावजूद सेवा उत्पादन में जुलाई 2010 के बाद से दूसरी सबसे तेज वृद्धि हुई। सेवा गतिविधि सूचकांक लगातार 22वें महीने से 50 से ऊपर बना हुआ है। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब है कि गतिविधियों में विस्तार हो रहा है, जबकि 50 से कम अंक संकुचन को दर्शाता है।

एसएंडपी ग्लोबल मार्केट इंटेलिजेंस में अर्थशास्त्र की संयुक्त निदेशक पोलियाना डी लीमा ने कहा, 'मई के पीएमआई आंकड़े मौजूदा मांग में लचीलापन, प्रभावशाली उत्पादन वृद्धि और भारत के गतिशील सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन को दर्शाते हैं।' उन्होंने कहा कि सर्वेक्षण में शामिल कंपनियों ने अपने कार्यबल का विस्तार किया। कंपनियां अगले 12 महीनों में व्यावसायिक गतिविधि में वृद्धि के लिए उत्साहित हैं।

12 तक यूबीएस का होगा क्रेडिट सुइस

बर्लिन (एपी)।

स्विट्जरलैंड के यूबीएस बैंक ने सोमवार को कहा कि वह लंबे समय तक प्रतिस्पर्धी रहे क्रेडिट सुइस का अधिग्रहण 12 जून तक पूरा कर सकता है।

ज्यूरिख स्थित दोनों बैंक तीन अरब फ्रैंक (3.3 अरब डालर) के सौदे के तहत एक हो रहे है। मार्च में जब क्रेडिट सुइस के शेयर गिर गए थे और जमाकर्ताओं ने डरकर अपना पैसा निकालना शुरू कर दिया था, ऐसे माहौल में स्विस सरकार और नियामकों ने जल्दबाजी में इस सौदे को अंतिम रूप दिया था। इस विलय समझौते का मकसद दो अमेरिकी बैंकों के पतन के बाद वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उथल-पुथल को दूर करना था। इस अधिग्रहण के बाद यूबीएस स्विट्जरलैंड का एकमात्र प्रमुख बैंक रह जाएगा।

यूबीएस ने सोमवार को उम्मीद जताई कि अधिग्रहण 12 जून तक पूरा हो जाएगा। क्रेडिट सुइस ने कहा कि उसे अगले सोमवार तक सौदा पूरा होने की उम्मीद है और 12 जून को स्विस एक्सचेंज और न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज से इसे हटा दिया जाएगा।

अगले वर्ष पेश किया जाएगा आकाश का आईपीओ

नई दिल्ली (भाषा)।

शिक्षा प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी बायजू अगले साल के मध्य तक आकाश एजुकेशन सर्विसेज लिमिटेड का प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाने की तैयारी कर रही है।

आकाश एजुकेशन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराती है। बायजू ने एक बयान में कहा कि आकाश एजुकेशन सर्विसेज लिमिटेड (एईएसएल) की आय वित्त वर्ष 2023-24 में 4,000 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। इस दौरान परिचालन लाभ 900 करोड़ रुपए रह सकता है। कंपनी ने कहा, 'बायजू अपनी सहायक इकाई आकाश एजुकेशन सर्विसेज लिमिटेड का आईपीओ अगले साल के मध्य में पेश करेगी।'

ई कुकिंग को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली (भाषा)। देश में परिवारों को हफ्ते के सातों दिन और चौबीसों घंटे बिजली उपलब्ध होने से सरकार अब इलेक्ट्रिक कुकिंग (ई-कुकिंग) को बढ़ावा देना चाहती है। सरकार को उम्मीद है कि हर समय बिजली उपलब्ध होने से लोग अब ई-कुकिंग को अपनाएंगे। इस तरह लोग रसोईघरों में खाना पकाने आदि के लिए बिजली के उपकरणों का इस्तेमाल करेंगे। अतिरिक्त बिजली सचिव अजय तिवारी ने सोमवार को यहां आयोजित एक सम्मेलन में कहा, 'हम ई-कुकिंग की ओर बढ़ना चाहते है क्योंकि हमारे घरों में चौबीसों घंटे सातों दिन बिजली उपलब्ध है।'

उन्होंने बताया कि भारत ने केवल 18 माह में उन 2.6 करोड़ परिवारों को 'सौभाग्य' (योजना) कनेक्शन दिए है, जिनको बिजली की सुविधा उपलब्ध नही थी। उन्होंने कहा कि दुनिया के इतिहास में इससे पहले कभी भी इतने कम समय में इतने अधिक घरों को बिजली से रोशन नही किया गया है। बिजली मंत्रालय ने बयान में तिवारी के हवाले से कहा, 'हम सभी शहरी इलाकों में 23.5 घंटे और ग्रामीण इलाकों में 23 घंटे और इससे भी ज्यादा बिजली की आपूर्ति कर रहे है। यह एक बड़ी उपलब्धि है कि बिजली कटौती का दौर पीछे छूट गया है।' उन्होंने कहा कि दुनिया में 70 करोड़ लोगों की अब भी बिजली तक पहुंच नही है, और सार्वभौमिक ऊर्जा पहुंच जी20 की प्राथमिकताओं में से एक है।

वाजिब किराया तय करने की व्यवस्था बनाएं एयरलाइंस

नई दिल्ली (भाषा)। हवाई किराए में जारी उछाल के बीच सरकार ने सोमवार को विमानन कंपनियों से किराए को वाजिब स्तर पर रखने के लिए एक व्यवस्था बनाने को कहा। एयरलाइंस सलाहकार समूह की एक घंटे तक चली बैठक में नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने देश में कुछ खास हवाई मार्गो पर किराए में आए उछाल को लेकर चिंता जाहिर की। इसके साथ ही नागर विमानन मंत्रालय ने कहा कि किसी आपदा की स्थिति में एयरलाइंस को मानवीय स्थितियों को ध्यान में रखते हुए टिकटों के दाम पर कड़ी नजर रखनी होगी ताकि उस इलाके में टिकटों के दाम में अचानक बढ़ोतरी को नियंत्रित किया जा सके।

ओडिशा के बालासोर में हुए भीषण ट्रेन हादसे को देखते हुए सरकार ने एयरलाइंस को मृतकों के परिजनों को मुफ्त कार्गो सेवाएं देने की भी सलाह दी है। गो फर्स्ट एयरलाइन के दिवाला समाधान प्रक्रिया में चले जाने से उनके परिचालन वाले मार्गो पर किराया बहुत अधिक हो गया है। इसके अलावा अन्य मार्गो पर भी एयरलाइन कंपनियों ने किराए को ऊंचे स्तर पर रखा हुआ है। इसे लेकर व्यापक स्तर पर नाराजगी देखने को मिल रही है। इस तरह के हालात में हवाई यात्रियों को होने वाली मुश्किलों से राहत दिलाने के लिए यह बैठक बुलाई गई थी। इसमें सरकार की तरफ से विमानन कंपनियों को अपने स्तर पर हवाई टिकटों के दाम में बढ़ोतरी पर नजर रखने को कहा गया है।

प्रौद्योगिकी कंपनियों के लिए भारत आना आसान हुआ

सिलिकॉन वैली (भाषा)।

भारत सरकार ने प्रौद्योगिकी कंपनियों से एफडीआई आकर्षित करने पर बहुत अधिक जोर दिया है, जिसके कारण वैश्विक कंपनियों के लिए एक दशक पहले के मुकाबले आज भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना काफी आसान हो गया है।

एक अमेरिकी फर्म डॉक्यूसाइन के नवनियुक्त भारतीय-अमेरिकी अध्यक्ष रॉबर्ट चटवानी ने यह बात कही। उन्होंने भारत में प्रशासन और अन्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी को अधिक से अधिक अपनाने पर जोर दिया। चटवानी ने बताया, 'मेरी समझ यह है कि ये सभी कानून मौजूदा सरकार के तहत आए हैं। इससे संकेत मिलता है कि इस सरकार के नेतृत्व में पिछले कई वर्षो के दौरान किस तरह सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी को अपनाने का चलन बढ़ा है।'

एनसीएलटी ने गो फर्स्ट से मांगा जवाब

■ पट्टे पर विमान देने वाली कंपनियों की याचिका पर जारी किया नोटिस

नई दिल्ली (भाषा)।

राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) ने सोमवार को विमान वापस लेने की तीन पट्टेदारों की याचिका पर गो फर्स्ट के अंतरिम समाधान पेशेवर (आईआरपी) से एक हफ्ते में जवाब दाखिल करने को कहा है। विमान पट्टे पर देने वाली इन तीन कंपनियों ने वाडिया समूह की फर्म से अपने विमानों और इंजनों को वापस लेने के लिए याचिका दायर की थी।

एनसीएलटी की समक्ष याचिका दायर करने वाली कंपनियों बीओसी एविएशन (आयरलैंड), जैक्सन स्क्वायर एविएशन आयरलैंड और इंजन लीज फाइनेंस बीवी हैं। एनसीएलटी की दो सदस्यीय पीठ ने आईआरपी को दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। मामले की अगली सुनवाई 15 जून को होगी। जैक्सन स्क्वायर एविएशन आयरलैंड ने लगभग आठ विमान पट्टे पर दिए हैं, जबकि इंजन लीज फाइनेंस बीवी ने गो फर्स्ट को चार इंजन पट्टे पर दिए हैं। अपीलीय न्यायाधिकरण एनसीएलएटी ने पिछले महीने उन्हें अपने विमानों को कब्जे में लेने पर लगी रोक के संबंध में दिवाला न्यायाधिकरण से संपर्क करने को कहा था, जिसके बाद पट्टेदार एनसीएलटी में चले गए थे।

इससे पहले आईआरपी ने दिल्ली हाईकोर्ट में कहा था कि पट्टेदारों को विमान लौटाने से एयरलाइन 'खत्म' हो जाएगी। एयरलाइन पर अपने 7,000 कर्मचारियों की जिम्मेदारी है। इससे पहले एनसीएलएटी ने गो फर्स्ट की स्वैच्छिक रूप से ऋणशोधन प्रक्रिया में जाने की याचिका स्वीकार करने के एनसीएलटी के आदेश को बरकरार रखा था।

इनड्राइव का नया कैंपेन

नई दिल्ली (वि)। अंतरराष्ट्रीय राइड-हेलिंग प्लेटफॉर्म इनड्राइव, दुनिया भर में दो बिलियन से अधिक राइड पूरी होने के साथ दिल्ली में यात्रियों और ड्राइवरों को आपस में उचित किराए पर बातचीत करने की अनुमति देकर राइड-शेयरिंग इंडस्ट्री में नई क्रांति लेकर आया है। इनड्राइव ने एक नया कैंपेन शुरू किया है - 'उस उचित मूल्य पर यात्रा कीजिए, जिस पर आप दोनों सहमत हैं'। यह कैंपेन राइड-हेलिंग एल्गोरिदम को बातचीत और मानवीय भावों के साथ ज्यादा बेहतर तरीके से काम करने योग्य बनाता है ताकि यात्री और ड्राइवर आपस में बात करके उचित किराये पर सहमति बना सकें। इनड्राइव ने दिल्ली में 'ड्राइवर ऑफ द मंथ' के लॉन्च की भी घोषणा की। कैंपेन के दौरान इनड्राइव के साथ सबसे अधिक राइड करने वाले कैब ड्राइवरों को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

प्रदूषण में 40 फीसद तक की कमी ला सकता है भारत

■ इसके लिए बंद करना होगा जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल ■ हर साल हो रहा ₹16 लाख करोड़ के कच्चे तेल का आयात

नई दिल्ली (भाषा)।

पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर भारत अपने प्रदूषण को 40 फीसद से ज्यादा कम कर सकता है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को यह बात कही। गौरतलब है कि भारत हर साल 16 लाख करोड़ रुपए का कच्चा तेल आयात करता है।

गडकरी ने यहां ग्रीन ऊर्जा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, 'हम पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन का उपयोग न करके 40 प्रतिशत प्रदूषण को कम कर सकते हैं।'

इस सम्मेलन का आयोजन आईआईटी-दिल्ली, आईआईटी-रोपड़ और दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से नवीकरणीय ऊर्जा सेवा पेशेवर एवं उद्योग परिसंघ ने किया था। उन्होंने कहा, 'हम हर साल 16 लाख करोड़ रुपए के जीवाश्म ईंधन का आयात करते हैं। यह हमारे लिए एक बड़ी आर्थिक चुनौती है। इससे प्रदूषण भी होता है। इसके अलावा, हम 12 लाख करोड़ रुपए के कोयले का भी आयात करते हैं।'

गडकरी ने स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए नई तकनीक लाने के लिए आईआईटी जैसे संस्थानों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि नई प्रौद्योगिकी जरूरत पर आधारित होनी चाहिए, आर्थिक रूप से व्यवहार्य होनी चाहिए और इसके लिए कच्चा माल उपलब्ध होना चाहिए।

असम में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाएं शुरू की गईं

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को असम में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी। इसके साथ ही गडकरी ने असम में दो राष्ट्रीय राजमार्गों का उद्घाटन भी किया। इन चारों राजमार्ग परियोजनाओं की कुल लागत करीब 1,450 करोड़ रुपए है। गडकरी ने एक आनलाइन कार्यक्रम में राष्ट्रीय राजमार्ग 15 पर 535 करोड़ रुपए की लागत से चार लेन वाले मंगलदेई बाइपास बनाने और राष्ट्रीय राजमार्ग 29 पर 517 करोड़ रुपए की लागत से 13 किलोमीटर लंबे दबोका-परखुवा खंड के निर्माण की आधारशिला रखी। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग 127 के 10 किलोमीटर लंबे एवं 247 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित नगांव बाइपास- तेलियागांव खंड और इसी राजमार्ग के आठ किलोमीटर लंबे एवं 156 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित तेलियागांव-रंगगरा खंड को राष्ट्र को समर्पित भी किया।

सूचीबद्ध कंपनियों ने इक्विटी व बांड से ₹63,300 करोड़ जुटाए

नई दिल्ली (भाषा)।

सूचीबद्ध कंपनियों ने अप्रैल में पूंजी बाजार से करीब 63,300 करोड़ रुपए जुटाए है। बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि कंपनियां इस राशि का इस्तेमाल कर्ज चुकाने, नई परियोजनाओं के पूंजीगत व्यय, अधिग्रहण, विपणन और अनुसंधान तथा विकास कार्यो के लिए करेंगी।

सेबी के आंकड़ों के मुताबिक, इस साल अप्रैल में कुल 63,278 करोड़ रुपए जुटाए गए, जिसमें से 55,462 करोड़ रुपए बांड बाजार से और शेष 7,816 करोड़ रुपए इक्विटी बाजार से जुटाए गए। इसकी तुलना में अप्रैल, 2022 में कंपनियों ने इक्विटी के जरिए 19,588 करोड़ रुपए और बांड बाजार से 14,750 करोड़ रुपए जुटाए थे।

'सॉफ्ट सिग्नल' की छुट्टी, हेलमेट अनिवार्य... डब्लूटीसी फाइनल से पहले बदले नियम

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले में कुछ नए नियम देखने को मिलेंगे। अब सॉफ्ट सिग्नल नियम को हटा दिया गया है। बल्लेबाजों के लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य किया गया है। फ्री हिट में बोल्ड होने पर खिलाड़ी दौड़ कर रना बना सकते हैं। टीम इंडिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच लंदन के ओवल मैदान पर 7 जून से डब्लूटीसी फाइनल खेला जाएगा। इस ब्लॉकबस्टर फाइनल मुकाबले को लेकर दोनों देशों के क्रिकेट फैन्स में जबरदस्त क्रेज दिख रहा है। आईसीसी ने भी फाइनल मैच से पहले प्लेइंग कंडीशन में कुछ बदलाव किए हैं, ताकि मुकाबले को और रोचक बनाने साथ-साथ उसमें पारदर्शिता लाया जा सके।

'सॉफ्ट सिग्नल' रूल हुआ आउट

फाइनल मुकाबले में इस बार 'सॉफ्ट सिग्नल' रूल का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। यानी मैदानी अंपायरों के पास फैसला रेफर करने से पहले 'सॉफ्ट सिग्नल' देने का अधिकार नहीं रहेगा। इससे पहले अगर मैदानी अंपायर किसी संदिग्ध कैच के मामले में तीसरे अंपायर का सहारा लेता था तो उसे 'सॉफ्ट सिग्नल' देना होता था। 1 जून से इंटरनेशनल मैचों में इस नियम को लागू किया जा चुका है। आपको बता दें कि सॉफ्ट सिग्नल को लेकर कई बार बवाल मच चुका है।

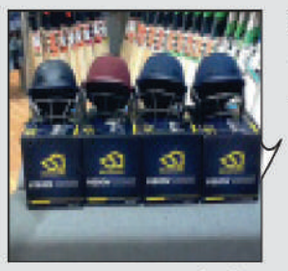

फ्लड लाइट्स में हो सकता है खेल

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले डब्लूटीसी फाइनल में बादल छाए रहते हैं और प्राकृतिक रोशनी उतनी अच्छी नहीं रहती है तो फ्लड लाइट्स ऑन की जा सकती है। वैसे अच्छी बात यह है इस मैच के लिए 12 जून को एक रिजर्व-डे (छठा दिन) रखा गया है।

हेलमेट को लेकर ये है नया नियम

आईसीसी ने 1 जून से इंटरनेशनल मैचों के दौरान जोखिम भरी परिस्थितियों में हेलमेट पहनना भी अनिवार्य कर दिया गया था। अब तेज गेंदबाजों का सामना करते समय बल्लेबाज को हेलमेट पहनना ही होगा। जब विकेटकीपर स्टंप्स के पास और फील्डर्स पिच के सामने बैटर्स के करीब खड़े हों, उस समय भी उनका हेलमेट पहनना जरूरी होगा।

भारत का दूसरा फाइनल

भारतीय टीम ने कुछ महीने पहले टेस्ट सीरीज में ऑस्ट्रेलिया को 2-1 से पराजित किया था, जिसके चलते वह नए जोश के साथ मैदान पर उतरेगी। देखा जाए तो भारत लगातार दूसरी बार वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेलने जा रही है। इससे पहले टीम इंडिया ने साल 2021 में इस टूर्नामेंट के पहले संस्करण का भी फाइनल खेला था। तब साउथम्पटन में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत को न्यूजीलैंड ने आठ विकेट से हरा दिया था। अब भारत के पास उस हार को भुलाकर ट्रॉफी पर कब्जा करने का सुनहरा मौका है।

फ्री हिट : बोल्ड होने पर बनेगा रन

आईसीसी ने वनडे और टी20 इंटरनेशनल में मिलने वाले फ्री हिट को लेकर भी नियमों में मामूली बदलाव किया था। अब यदि फ्री हिट के दौरान गेंद स्टंप्स पर लगती है और बल्लेबाज उस पर दौड़कर रन बना लेते हैं तो उसे स्कोर में जोड़ा जाएगा। इसका मतलब हुआ कि बल्लेबाज फ्री हिट पर बोल्ड होने के बावजूद रन बना सकता है।

खबर संक्षेप

सिंधू और प्रणय सिंगापुर ओपन में देंगे चुनौती

सिंगापुर। गत चैंपियन पी वी सिंधू थाईलैंड में खराब प्रदर्शन के बाद यहां मंगलवार से शुरू हो रहे सिंगापुर ओपन सुपर 750 टूर्नामेंट के जरिए वापसी की कोशिश करेंगी जबकि फॉर्म में चल रहे एच एस प्रणय जीत की लय कायम रखना चाहेंगे। पिछले साल अगस्त में टखने की चोट का शिकार हुई सिंधू के लिए हालात समान नहीं रहे हैं। वह धीरे धीरे लय में लौट रही हैं और मैड्रिड में स्पेन मास्टर्स में फाइनल तथा मलेशिया मास्टर्स में सेमीफाइनल तक पहुंची। थाईलैंड ओपन में हालांकि वह पहले दौर में बाहर हो गई। सिंधू का सामना पहले ही दौर में दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी जापान की अकाने यामागुची से होगा। सिंधू का उसके खिलाफ कॅरियर रिकॉर्ड 14-9 का है लेकिन पिछले साल थाईलैंड ओपन में दोनों की टक्कर के बाद काफी कुछ बदल गया है।

जीसीएल ने घोषित की छह फ्रेंचाइजी टीमें

TECH mahindra GLOBAL CHESS LEAGUE

नई दिल्ली। ग्लोबल शतरंज लीग ने सोमवार को अपनी छह टीमें घोषित की जो दुबई में 21 जून से दो जुलाई तक होने वाले टूर्नामेंट में भाग लेंगी। इस टूर्नामेंट का आयोजन टेक महिंद्रा और अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) के संयुक्त प्रयास से किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता रैपिड प्रारूप में दोहरे राउंड रोबिन आधार पर खेली जाएगी। इस तरह से प्रत्येक टीम कम से कम 10 मैच खेलेगी। जीसीएल में पुरुष, महिला और अंडर 21 खिलाड़ी एक टीम के रूप में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करेंगे।

एशियाई अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप

सिद्धार्थ ने 19.52 मीटर गोला फेंक जीता स्वर्ण, शाहरुख को सिल्वर

एजेंसी ▶▶ येचियोन

गोला फेंक खिलाड़ी सिद्धार्थ चौधरी ने सोमवार को यहां एशियाई अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 19.52 मीटर के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से भारत के लिए तीसरा स्वर्ण पदक जीता। इस 17 साल के खिलाड़ी ने अपने तीसरे प्रयास में 19.52 मीटर का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इससे पहले जूनियर स्तर पर उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 19.11 मीटर का था। कतर के जिब्राइन अदौम अहमत (18.85 मी) और मेजबान देश के पार्क सिहून (18.70 मी) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। भारत ने प्रतियोगिता के दूसरे दिन छह पदक जीतकर जापान (आठ स्वर्ण, दो रजत, दो कांस्य) और चीन (पांच स्वर्ण, तीन रजत, दो कांस्य) के बाद तीन स्वर्ण, तीन रजत और तीन कांस्य के साथ तालिका में तीसरा स्थान हासिल किया।

लोहकरे ने 72.34 मीटर फेंका भाला

भाला फेंक में शिवम लोहकरे (72.34 मीटर), पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज में शाहरुख खान (आठ मिनट 51.74 सेकंड) और लंबी कूद में सुष्मिता (5.96 मीटर) ने प्रतियोगिताओं के दूसरे दिन रजत पदक जीते।

शकील को कांस्य पदक

चार गुणा 400 मीटर रिले टीम (तीन मिनट 30.12 सेकंड) और 800 मीटर धावक शकील (एक मिनट 49.79 सेकंड) ने में कांस्य पदक जीते। इससे पहले रेजोआना हीना मलिक और भरतप्रीत सिंह ने रविवार को क्रमशः महिला 400 मीटर रेस और पुरुष चक्का फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक अपने नाम किये थे।

भारत की लगातार दूसरी जीत मलेशिया को 1-2 से मिली हार

महिला जूनियर हॉकी एशिया कप

एजेंसी ▶▶ काकामिगाहारा

भारतीय टीम ने एक गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए महिला जूनियर एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट में मलेशिया को सोमवार को 2-1 से हराया। भारत के लिए मुमताज खान ने दसवें और दीपिका ने 26वें मिनट में गोल किया। मलेशिया के लिए डियान नजेरी ने छठे मिनट में गोल दागा। इस जीत के बाद भारत पूल ए में शीर्ष पर है जिसने पहले मैच में उजबेकिस्तान को 22-0 से शिकस्त दी थी। भारत ने पहले मिनट से ही आक्रामक खेल दिखाया और कुछ पेनल्टी कॉर्नर बनाए हालांकि उन पर गोल नहीं हो सका। दूसरी ओर मलेशिया ने शुरुआत में गेंद पर नियंत्रण में बाजी मारी और छठे ही मिनट में नजेरी ने उसके लिए गोल कर दिया। मलेशिया की बढ़त हालांकि ज्यादा देर तक नहीं रही और चार मिनट बाद मुमताज ने पेनल्टी कॉर्नर पर भारत के लिए बराबरी का गोल किया। हाफ टाइम से चार मिनट पहले भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिला जिसे दीपिका ने गोल में बदला। हाफटाइम के बाद कोई टीम गोल नहीं कर सकी। भारत का सामना मंगलवार को तीसरे पूल मैच में कोरिया से होगा।

धोनी को देखकर दबाव से निपटना सीखा

नई दिल्ली। भारतीय जूनियर हॉकी कप्तान उत्तम सिंह दबाव से नहीं डरते और यह हुनर उन्होंने अपने पसंदीदा खिलाड़ी महेंद्र सिंह धोनी को देखकर सीखा है। ये झलक उनमें आस्ट्रेलिया के खिलाफ सुल्तान जोहोर कप फाइनल में सडन डैथ में गोल करने से लेकर चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को हराकर जूनियर एशिया कप जीतने तक में दिखा। उत्तम की कप्तानी में भारत ने ओमान के सालालाह में एक जून को जूनियर एशिया कप में पाकिस्तान को 2-1 से हराकर रिकॉर्ड चौथी बार खिताब जीता।

कोको गॉफ ने अन्ना करोलिना को 7-5, 6-2 से दी शिकस्त

गॉफ लगातार तीसरी बार क्वार्टर फाइनल में पहुंची

एजेंसी ▶▶ पेरिस

अमेरिका की टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ ने पहले सेट के दौरान लगी घुटने की चोट से उबरते हुए अन्ना करोलिना शमीडलोवा को सोमवार को यहां 7-5, 6-2 से शिकस्त देकर लगातार तीसरी बार फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की।

महिला वर्ग में ओंस जाबूर और 14वीं वरीयता प्राप्त ब्राजील की बीट्रिज हद्दाद माइया भी क्वार्टर फाइनल में पहुंचने में सफल रही। अंतिम आठ में ये दोनों खिलाड़ी एक-दूसरे के सामने होंगे। सातवीं वरीयता प्राप्त जाबूर ने बर्नाडा पेरा को सीधे सेटों में पराजित किया। ट्यूनीशिया की जाबूर ने अमेरिका की गैर वरीयता प्राप्त खिलाड़ी पेरा को 6-3, 6-1 से हराया। हद्दाद माइया ने रैंकिंग में 132वें स्थान पर काबिज सारा सोर्रिबेस टोरमो को तीन घंटे 51 मिनट तक चले मैच में 6-7, 6-3, 7-5 से हराया। पुरुष वर्ग में चौथी वरीयता प्राप्त कैस्पर रुड भी लगातार दूसरे साल अंतिम आठ में पहुंचने में सफल रहे। पिछले साल के इस उपविजेता ने निकोलस जैरी 7-6 , 7-5, 7-5 से मात दी।

वेस्टइंडीज ने यूएई को सात विकेट से हराया

शारजाह। सलामी बल्लेबाज ब्रेंडन किंग के पहले शतक की मदद से वेस्टइंडीज ने रविवार को यहां तीन मैचों की श्रृंखला के पहले एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में यूएई को सात विकेट से हरा दिया। किंग ने 112 गेंद में 12 चौकों और चार छक्कों की मदद से 112 रन की पारी खेली जबकि शामरा ब्रूक्स ने 44 रन बनाए जिससे टीम ने 88 गेंद शेष रहते जीत दर्ज की। नए कप्तान शाई होप (नाबाद 13) ने छक्का जड़कर 35.2 ओवर में टीम का स्कोर तीन विकेट पर 206 रन तक पहुंचाकर उसे जीत दिलाई। इससे पहले यूएई की टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 47.1 ओवर में 202 रन पर सिमट गई। तेज गेंदबाज कीमो पॉल ने 34 रन पर तीन विकेट चटकाए। मेजबान टीम ने लिए 19 साल के अली नसीर पदार्पण करते हुए 52 गेंद में 58 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे।

छत्तीसगढ़ ने विदर्भ को सात विकेट से हराया, ओडिशा ने दर्ज की जीत

▶▶ राजनांदगांव

छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ ने खिताब के प्रबल दावेदार विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन को 7 विकेट से पराजित किया। छत्तीसगढ़ ने इस तरह 18वीं रानी सूर्यमुखी देवी मेमोरियल ऑल इंडिया टी-20 फ्लड लाईट क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई। वहीं पहले खेले गए एकतरफा सेमीफाइनल में ओडिशा क्रिकेट एसोसिएशन ने उत्तरप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन को 80 रन से हराकर खिताबी दौड़ में शामिल हुई।

प्रतियोगिता में विधायक व पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, जनप्रतिनिधि रमेश पटेल, जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष सुशील कोठारी व सचिव योगेश बागड़ी उपस्थित थे। पहले सेमीफाईनल मैच में उत्तरप्रदेश ने टॉस जीतकर ओडिसा को बल्लेबाजी के लिए अमांत्रित किया। ओडिसा की टीम 20 ओवर में 170 रन पर सिमट गई। उत्तरप्रदेश की टीम 91 रन पर ही सिमट गई। दूसरे सेमीफाईनल मैच में मेजबान छत्तीसगढ़ स्टेट के हाथों विदर्भ क्रिकेट एसोसिएशन को हार का सामना करना पड़ा। विदर्भ ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 158 रन बनाए। छत्तीसगढ़ के ओपनर बल्लेबाज अनुज तिवारी व शशांक चंद्रकार ने पहले विकेट की साझेदारी में 81 रन जोड़े। जिसमें अनुज तिवारी के 45 गेंद में 64 रन की तेज पारी थी व शशांक के 22 गेंद में 31 रन की महत्वपूर्ण पारी थी। छत्तीसगढ़ की टीम 162 रन पर 3 विकेट गंवाकर फाइनल में पहुंची।

फिलीपींस में ज्वालामुखी विस्फोट की आशंका

मनीला, (एजेंसी)। फिलीपीन इंस्टीट्यूट ऑफ वोल्कैनोलॉजी एंड सीस्मोलॉजी ने लूजोन द्वीप के सबसे दक्षिणी सिरे पर स्थित सर्वाधिक सक्रिय ज्वालामुखी मेयोन के बारे में चेतावनी स्तर बढ़ा दिया है जहां भूगर्भीय हलचल बढ़ने के कारण ज्वालामुखी विस्फोट होने की आशंका है।

संस्थान ने मनीला से लगभग 500 किमी दक्षिण-पूर्व में अल्बे प्रांत में 2,460 मीटर मेयोन ज्वालामुखी के चेतावनी स्तर को पांच से बढ़ाकर दो पर कर दिया है जिसका मतलब है कि धरती के नीचे जिस तरह की हलचल हो रही है उसे कभी भी उग्र रूप में खतरनाक मैग्मा विस्फोट के रूप में सतह पर देखा जा सकता है। हाल ही में ज्वालामुखी के लावा गुंबद से पत्थर गिरने की घटनाओं को देखा है जो बढ़ती भूगर्भीय हलचल का संकेत है। संस्थान ने 01 अप्रैल से, 318 चट्टान गिरने की घटनाओं और 26 ज्वालामुखीय भूकंपों को दर्ज किया है।

संस्थान ने प्रांत के लोगों को ज्वालामुखी के 06 किमी के दायरे के खतरे वाले क्षेत्र से दूर रहने की चेतावनी दी और विस्फोटों, चट्टानों और भूस्खलनों के लिए सतर्कता का आग्रह किया। इसने नागरिक उड्डयन अधिकारियों से आग्रह किया कि वे पायलटों को सलाह दें कि वे ज्वालामुखी के शिखर के करीब उड़ान भरने से बचें क्योंकि किसी भी अचानक विस्फोट के समय उड़ने वाली राख विमान के लिए खतरनाक हो सकती है।

बेन वालेस की नाटो प्रमुख की उम्मीदवारी होगी तय

बाइडेन को समर्थन देने का सुनक करेंगे आग्रह

लंदन, (एजेंसी)। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक अमेरिका की अपनी आगामी यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से नाटो महासचिव के पद के लिए ब्रिटिश रक्षा मंत्री बेन वालेस की उम्मीदवारी को अपना समर्थन देने का आग्रह कर सकते हैं। द टेलीग्राफ ने सोमवार को अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी। रिपोर्ट में कहा गया है कि जापान के हिरोशिमा में जी7 देशों के नेताओं की हालिया बैठक के मौके पर श्री सुनक ने पहले ही गठबंधन के महासचिव के पद पर वालेस की नियुक्ति का विषय उठाया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि वैलेस अमेरिकी सरकार में यूक्रेन का समर्थन करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन बनाने में अपनी केंद्रीय भूमिका के साथ-साथ जीडीपी के 2.25 प्रतिशत तक देश के रक्षा खर्च में वृद्धि के कारण काफी लोकप्रिय हैं। गौरतलब है कि रिपोर्ट के अनुसार नाटो महासचिव पद के लिए वालेस की उम्मीदवारी को फ्रांस और जर्मनी का समर्थन नहीं मिलेगा।

लखनऊ के इकाना स्टेडियम में लगा होर्डिंग गिरा, दो की मौत

लखनऊ, (ब्यूरो)। स्थानीय इकाना स्टेडियम में तेज आंधी से एक बड़ा होर्डिंग गिर गया। जानकारी के मुताबिक इस हादसे में एक स्कॉर्पियो कार नीचे दब गई। साथ ही तीन लोगों के दबने की भी खबर सामने आई। पुलिस ने मलबे में दबे तीन घायलों को रेस्क्यू कर अस्पताल भेजा। लेकिन इनमें से दो (मां और बेटी) की जान चली गई।44 सेकेंड के वीडियो में देखा जा सकता है कि बोर्ड के मलबे के नीचे दबा व्यक्ति मदद मांग रहा था। वीडियो में देखा जा सकता है कि यह बहुत बड़ा बोर्ड आंधी से गिर गया। बताते चलें कि इस हादसे में प्रीति जग्गी (38) की मौत हो गई। प्रीति दीपक लूथरा की पत्नी थीं जो कि एचएल सब्जी मंडी, थाना इंदिरा नगर, गाजीपुर की निवासी थीं। वो अपनी 15 साल की बेटी कुमारी एंजेल के साथ फिनिक्स मॉल घूमने निकली थीं।

गैंगस्टर बिश्नोई का जेल में बैठकर फिरौती मांगने का ऑडियो मिला

लारेंस ने वसूले थे गूगल से 40 लाख रुपए

नई दिल्ली, (एजेंसी)। गैंगस्टर लॉरेंस बिशनोई का जेल में बैठकर वसूली का नया सबूत मिला है। इंडिया टीवी के हाथ एक ऑडियो हाथ लगा है। बताया जा रहा है कि ये ऑडियो लॉरेंस बिश्नोई का दिल्ली के एक व्यापारी से बातचीत का है। इस कॉल रिकॉर्डिंग में लॉरेंस इस बिजनेसमैन को कच्चा चबाने की धमकी दे रहा है। सूत्रों के अनुसार ऑडियो में जिस गूगल को लॉरेंस धमका रहा है वो गूगल एक फर्म का नाम है। जिसमें तीन पार्टनर हैं। इसी कंपनी के एक मालिक को लॉरेंस फिरौती के लिए धमका रहा था, जिससे 40 लाख रुपए वसूले भी थे।

इस ऑडियो की पूरी बातचीत ये रही-

गूगल: हैलो?

लॉरेंस: हेलो... हां भाई बोल।

गूगल: बाऊजी आपका फोन कट गया था, मैंने कहा।

लॉरेंस: तू पहचानता ही नहीं गूगल भाई। तू रिकॉर्डिंग लगानी है तू लगा लेना। जिस दिन हत्थे चढ़ गया ना... तुम में से कोई भी या तेरे आसपास के, नजदीक के या परिवार के.. तो मैं सारों को चबा जाऊंगा। ये मेरी रिकॉर्डिंग कर लेना बाद में केस करने में आसानी होगी तुमको।

गूगल: किस चीज का केस करने में आसानी होगी। जब मैंने काम ही बंद कर दिया, तो मैं किस चीज की पेशगी और किस चीज की.... वो मैं इतने पैसे हार गया कि मैं खत्म कर चुका हूं काम तीन महीने पहले, पता तो कर लो आप बाजार में किसी से।

लॉरेंस (हंसते हुए): अच्छा, किसी को बता देना कि मेरा फोन आया था... मैंने खाली फोन किए ही नहीं कभी। हमारे नाम पर फ्रॉड फोन चले गए अभी तक जितने गए हैं।

गूगल: बाऊजी, आपको किसी ने गलत नंबर दे दिया है। मैं तो छोड़ चुका हूं सारे काम ही।

लॉरेंस: बस, अब सबकुछ छोड़ देगा भाई। राम-राम। दोबारा नहीं करेंगे आपको फोन।

आईपीएस प्रदीप शर्मा को कोर्ट से अंतरिम जमानत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मुंबई के सनसनीखेज मनसुख हिरन हत्या मामले में करीब दो साल से जेल में बंद महाराष्ट्र के सेवानिवृत्त आईपीएसी प्रदीप शर्मा को सोमवार तीन सप्ताह के लिए अंतरिम जमानत मंजूर कर ली। जस्टिस अनिरुद्ध बोस की अध्यक्षता वाली अवकाशकालीन पीठ ने याचिकाकर्ता शर्मा को बीमार पत्नी की देखभाल के लिए निचली कोर्ट द्वारा निर्धारित नियमों व शर्तों के आधार पर जमानत पर रिहा करने की मंजूरी दी। मनसुख हत्याकांड के आरोपियों में शामिल शर्मा 17 जून 2021 से हिरासत में है। जेल में बंद याचिकाकर्ता ने 23 जनवरी के बॉम्बे हाईकोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी थी। जिसमें उनकी बेल अर्जी खारिज कर दी थी। उद्योगपति अंबानी परिवार को जान से मारने की धमकी की कथित नियत से जिलेटिन लदी एसयूवी प्रतिष्ठित एंटीलिया बिल्डिंग के पास लावारिस पाया गया था।

विनेश-बजरंग ने नौकरी छोड़ने की धमकी दी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल रेसलर्स बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट ने रेलवे की नौकरी छोड़ने की धमकी दी है। उन्होंने कहा है कि अगर नौकरी इंसाफ के रास्ते में बाधा बनती दिखी तो उसको त्यागने में हम 10 सेकेंड का वक्त भी नहीं लगाएंगे। नौकरी का डर मत दिखाइए।

दरअसल, साक्षी मलिक, बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट सोमवार को अपनी नौकरी पर लौट आए। तीनों रेलवे में नौकरी करते हैं। रेलवे पब्लिक रिलेशन के डायरेक्टर जनरल योगेश बवेजा ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि तीनों ने सोमवार को ही ड्यूटी जॉइन की है। ड्यूटी पर लौटने के बाद खबर आई कि बृजभूषण पर यौन शोषण का आरोप लगाने वाली नाबालिग रेसलर अपने बयान से पलट गई है। दावे के मुताबिक, नाबालिग ने दिल्ली के कनॉट प्लेस पुलिस थाने में बयान दिए। इसके बाद उसे पटियाला हाउस कोर्ट ले जाया गया, जहां उसने बयान वापस ले लिया। तीनों रेसलर ने भी आंदोलन से नाम वापस ले लिया है।

ब्रिटेन में अवैध प्रवासियों को जहाजों पर रखेंगे

लंदन, (ए)केंट के तटवर्ती कस्बे डोवेर में सुनक ने कहा कि ऐसा एक जहाज इस महीने के अंत तक तैयार हो जाएगा। दो अन्य जहाज भी तैयार किए जाएंगे। इसमें करीब 1,000 लोगों को रखा जा सकता है। ब्रिटेन में अवैध प्रवासियों को नौकाओं में रोकने की योजना पर काम चल रहा है। प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने सोमवार को दावा किया कि ब्रिटेन के तटों पर आने वाले अवैध प्रवासियों की नौकाओं को रोकने की योजना पर युद्धस्तर पर काम किया जा रहा है। उन्होंने करदाताओं के पैसों से चल रहे होटलों पर दबाव कम करने के मकसद से ऐसे प्रवासियों को जहाजों पर ही रखने की घोषणा की है।

रुजिरा बनर्जी को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोका

कोलकाता, (एजेंसी)। टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा बनर्जी को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोक लिया गया। रुजिरा को कोलकाता से दुबई के लिए फ्लाइट पकड़ने वाली थीं। ईडी ने दो दिन बाद रुजिरा को पूछताछ के लिए समन दिया है। ऐसे में रुजिरा को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोके जाने को इसी से जोड़कर देखा जा रहा है।

आज का इतिहास

- **1660:** डेनमार्क तथा स्वीडन के बीच शांति समझौता हुआ।
- **1674:** शिवाजी महाराज का रायगढ़ के किले में राज्याभिषेक और साथ ही उन्होंने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की।
- **1808:** नेपोलियन के भाई जोसफ को आज दिन स्पेन का राजा बनाया गया।
- **1916:** अमेरिका के ईस्ट क्लीवलैंड में महिलाओं को वोट का अधिकार दिया।
- **1918:** विश्व युद्ध-1 में बेलेयू वुड के युद्ध में अमेरिका को पहली जीत मिली।
- **1919:** प्रिकमर्ग गणराज्य पर हंगरी की लाल सेना का आक्रमण हुआ।
- **1981:** बिहार की बाघमती नदी में ट्रेन गिरने से सवार 1000 लोगों में से करीब 800 की मौत हो गई।
- **1982:** कर्नाटक के 8वें मुख्यमंत्री डी. देवराज अर्स का निधन।
- **1984:** दमदमी टकसाल प्रमुख, खलिस्तान आंदोलन नेता जरनैल सिंह भिंडरांवाले का निधन।

डोभाल-ऑस्टिन ने सामरिक संबंध मजबूत बनाने के उपायों पर चर्चा की

नई दिल्ली ■ एजेंसी

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने सोमवार को यहां अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड आस्टिन के साथ मुलाकात की और दोनों देशों के बीच समुद्री, सैन्य और एयरोस्पेस क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी में सहयोग बढाने के उपायों पर चर्चा की।

सूत्रों के अनुसार श्री डोभाल ने दो दिन की यात्रा पर रविवार को यहां पहुंचे श्री आस्टिन के साथ 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत ' जैसी पहलों की तर्ज पर प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण, सह उत्पादन और स्वदेशी क्षमता को बढाने पर भी बातचीत की।

दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय , क्षेत्रीय और हिन्द प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सहित वैश्विक महत्व के मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने साझा सुरक्षा हितों और समुद्री क्षेत्र में सहयोग बढाने पर अपना दृष्टिकोण रखा। दोनों की बातचीत में भरोसेमंद आपूर्ति स्रोतों, मजबूत आपूर्ति श्रंखला और उद्योगों के बीच परस्पर सहयोग के मुद्दों पर विशेष जोर दिया गया। इस बात का उल्लेख किया गया कि पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्द प्रशांत जैसे अलग अलग क्षेत्रों के देशों को उनकी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के आधार पर स्वतंत्र रूख अपनाने की आजादी होनी चाहिए और उनपर कुछ थोपा नहीं जाना चाहिए। इस बात पर भी बल दिया गया कि वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सरकारों के समग्र प्रयासों के माध्यम से रणनीतिक रूख अपनाया जाना चाहिए जिसमें लोगों के बीच परस्पर संपर्क और सामाजिक स्तर पर संबंधों को भी समाहित किया जाना चाहिए। श्री आस्टिन ने हिन्द प्रशांत क्षेत्र में शांति और सुरक्षा की स्थिति बनाये रखने के लिए अमेरिका- भारत साझेदारी के महत्व का उल्लेख किया। समुद्री क्षेत्र में चीन के बढते प्रभुत्व और दबाव की रणनीति के मद्देनजर इस बात का विशेष महत्व है।

श्री आस्टिन की भारत यात्रा को इसलिए भी महत्वपूर्ण जाना जा रहा है क्योंकि यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इस महीने के अंत में होने वाली अमेरिका की आधिकारिक यात्रा से पहले हो रही है।

विपक्षी एकता बैठक में सीएम नीतीश कुमार ने पार्टी अध्यक्षों को बुलाया

पटना, (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री एवं जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के शीर्ष नेता नीतीश कुमार ने 12 जून को होने वाली विपक्षी एकता बैठक के टलने को लेकर आज स्पष्ट कर दिया कि इस बैठक में सभी पार्टी के अध्यक्ष को आना है, इसमें कोई दूसरा आएगा तो अच्छा नहीं लगेगा।

श्री कुमार ने सोमवार को संपूर्ण क्रांति दिवस के अवसर पर राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के साथ लोकनायक जयप्रकाश नारायण को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद संवाददाताओं से बातचीत के दौरान 12 जून को पटना में विपक्षी एकता की बैठक होने से संबंधित प्रश्न के उत्तर में कहा, '12 जून को होने वाली विपक्षी एकता की बैठक के लिए अधिकतर लोगों का समर्थन आ गया था। 12 तारीख को होने वाले कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया है। हमने कांग्रेस पार्टी से कहा है कि आपलोग भी बैठक के लिए आगे की तिथि को लेकर बात कर लीजिए। सभी पार्टी के अध्यक्ष को आना है इसमें कोई दूसरा आएगा तो अच्छा नहीं लगेगा।'

मुख्यमंत्री ने खगड़िया-अगवानी-सुल्तानगंज के निर्माणाधीन पुल के स्ट्रक्चर गिरने से संबंधित सवाल के जवाब में कहा कि इस निर्माणाधीन पुल का स्ट्रक्चर एकबार पहले और गिरा था उस समय भी उन्होंने पूछा था कि ऐसा क्यों हुआ है। वर्ष 2012 में ही इस पुल के निर्माण करने का निर्णय किया गया था और वर्ष 2014 में इसकी शुरुआत हुई। कल ही जानकारी मिली है कि फिर से इसका स्ट्रक्चर गिरा है।

गोवा में जी 20 आईएफएडब्ल्यूजी बैठक आज से

पणजी, (एजेंसी)। भारत की जी 20 अध्यक्षता के तहत जी 20 अंतरराष्ट्रीय फाइनेंशियल आर्किटेक्चर वर्किंग ग्रुप (आईएफएडब्ल्यूजी) की दो दिवसीय बैठक मंगलवार से गोवा में होगी और इसकी तैयारियां पूरी हो गई है। वित्त मंत्रालय ने कहा कि यह बैठक 6 और 7 जून को होगी। वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस बैठक की सह अध्यक्षता दक्षिण कोरिया और फ्रांस करेंगे। बैठक में जी 20 सदस्य आईएफएडब्ल्यूजी के मुख्य मुद्दों पर विचार विमर्श करेंगे। इस दौरान छह सत्र आयोजित किये जायेंगे। गौरतलब है कि भारत इस साल जी-20 बैठकों की अध्यक्षता कर रहा है।

सीमा पर फायरिंग, दो की हुई मौत, तीन लोग हुए लापता

ईटानगर,(एजेंसी) असम के धेमाजी जिले में सोमवार को अरुणाचल प्रदेश की सीमा के पास गोलीबारी हुई। इस घटना में 2 लोगों की मौत हो गई है, जबकि घटना के बाद से 3 अन्य लापता हैं। पुलिस अधीक्षक (एसपी) रंजन भुइयां ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्थानीय लोगों ने अंतरराज्यीय सीमा पर पौधरोपण अभियान का आयोजन किया था। उन्होंने बताया कि इसकी तैयारियों के लिए सुबह सात ग्रामीण मौके पर गए थे, लेकिन वे कथित रूप से गोलीबारी की जद में आ गए और उनमें से एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई।

नापाक मंसूबे कश्मीर पुलिस 36 आतंकियों को पकड़ने इंटरपोल से संपर्क करेगी

आतंकियों पर भारत की पैनी नजर

जम्मू ■ एजेंसी

आतंक के पारिस्थितिकी तंत्र को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध जम्मू-कश्मीर पुलिस किश्तवाड़ जिले के 36 आतंकियों को पकड़ने के लिए जल्द ही इंटरपोल से संपर्क कर सकती है। पुलिस सूत्रों ने सोमवार को यह जानकारी दी।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि किश्तवाड़ जिले के विभिन्न संगठनों के 36 कट्टर आतंकवादियों की पहचान पहले ही हो चुकी है, जो 90 के दशक के मध्य में पाकिस्तान या पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में भाग गए थे और डोडा-किश्तवाड़-रामबन क्षेत्र में युवाओं को आतंकवादी गतिविधियों में शामिल करने के लिए उकसा रहे हैं और कट्टरपंथी बना रहे हैं। उन्होंने कहा, 'पहचाने गए सभी आतंकवादियों की सूची तैयार है, जबकि उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट भी जारी कर दिये गए हैं। सूत्रों ने बताया कि इंटरपोल की मदद से उन्हें गिरफ्तार करने के प्रयास जारी हैं। उन्होंने कहा कि डोडा के मोहम्मद अमीन भट्ट उर्फ खुबैब, जो वर्तमान में पाकिस्तान में है, की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलने के बाद पुलिस के साथ-साथ सुरक्षा बल हाई अलर्ट पर हैं।

पीओके से जारी है गतिविधियां

लश्कर-ए-तैयबा का प्रमुख सदस्य भट्ट 1997 में पाकिस्तान गया था। वह युवाओं को गुमराह कर रहा था। पाकिस्तान ने उसे डोडा, किश्तवाड़, रामबन, उधमपुर आदि क्षेत्रों में आतंकवादी गतिविधियों को पुनर्जीवित करने के लिए अपने नेटवर्क का उपयोग करके युवाओं को उकसाने का काम सौंपा था। पहचाने गए आतंकवादियों को भारत लाने के लिए इंटरपोल की मदद ली जाएगी। जम्मू-कश्मीर पुलिस, सेना और अन्य संबंधित एजेंसियां यह सुनिश्चित कर रही हैं कि इन क्षेत्रों में कोई आतंकी गतिविधियां न हो तथा युवाओं को खेल, कौशल विकास कार्यक्रम, शैक्षिक और प्रचार कार्यक्रमों, पर्यटन और ऐसी कई योजनाओं के माध्यम से भी परामर्श दिया जा रहा है, ताकि उन्हें गलत रास्ता अपनाने से रोका जा सके। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पिछले साल अक्टूबर में भारत की आजादी के 75वें वर्ष के दौरान नई दिल्ली में कहा था कि आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है और यह बहुत उपयुक्त है कि यह 2020-2025 की अवधि के लिए इंटरपोल के सात वैश्विक पुलिसिंग लक्ष्यों में से पहला और सबसे महत्वपूर्ण है।

Filmi तड़का

कार्तिक और कियारा की फिल्म सत्यप्रेम की कथा का ट्रेलर हुआ जारी

मुंबई,। कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की अपकमिंग फिल्म 'सत्यप्रेम की कथा' का ट्रेलर सोमवार को जारी किया गया। ट्रेलर में कार्तिक सत्यप्रेम के रोल में हैं। सत्यप्रेम एक गुजराती व्यक्ति है और शादी करने के लिए बेताब है। वह कथा नाम की लड़की से मिलता है, जिसका किरदार कियारा ने निभाया है। धीरे-धीरे दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो जाता है। फिल्म को इसका शीर्षक इसके प्रमुख पात्रों और उनकी प्रेम कहानी से मिला है। ट्रेलर लगभग तीन मिनट का है। इसमें सत्या की बहन जैसे कई गुदगुदाने वाले डायलॉग बोलती हैं, जैसे- अरे इंटरनेट पे इसको फॉलोअर्स नहीं मिलते, लड़की क्या मिलेगी। ट्रेलर का एक अन्य आकर्षण कार्तिक का डायलॉग है, मैं वर्जिन हूं, मैंने सोचा अपनी बायदी के लिए अपने आपको सेव करके रखता हूं। ये सभी उदाहरण ट्रेलर को रोमांस से भरपूर फैमिली एंटरटेनर बनाते हैं। हालांकि, ट्रेलर एक ऐसे सच के जिक्र के साथ रास्ता बदल देता है, जो सत्या और कथा दोनों की जिंदगी बदल देगा। इससे पहले मेकर्स ने फिल्म का गाना %नसीब से% रिलीज किया था, जिसकी कुछ झलकियां ट्रेलर में भी देखी जा सकती हैं। एनजीई और नमह पिक्चर्स द्वारा निर्मित, सत्यप्रेम की कथा का निर्देशन समीर विदवान्स ने किया है और इसमें गजराज राव और सुप्रिया पाठक भी हैं। यह फिल्म 29 जून, 2023 को सिनेमाघरों में डेब्यू करने के लिए तैयार है।

एक महीने में दूसरी बार केदारनाथ दर्शन करने पहुंचीं नंदनी

देहरादून,। दक्षिण भारतीय फिल्मों की अभिनेत्री नंदिनी राय एक माह में दो बार केदारनाथ पहुंची हैं। उन्होंने केदारनाथ धाम में सुबह बाबा केदार के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। साथ ही आदिगुरु शंकराचार्य समाधिस्थल में एक घंटे तक साधना की। उन्होंने धाम में कई यात्रियों से बातचीत भी की और मंदिर में धर्म दर्शन, वीआईपी दर्शन सहित यात्रा व्यवस्थाओं को लेकर जिला प्रशासन, पुलिस और बीकेटीसी का आभार जताया। वह गंगोत्री, यमुनोत्री धाम के दर्शन के लिए जाएंगी। वहां से सीधे बदरीनाथ धाम पहुंचेगी।

मंदिर में धर्म दर्शन, वीआईपी दर्शन के लिए प्रशासन का जताया आभार

बीते शनिवार को केदारनाथ पहुंची फिल्म अभिनेत्री नंदिनी राय ने रविवार सुबह बाबा केदार के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। उन्होंने दिव्य शिला के दर्शन कर आदिगुरु शंकराचार्य समाधिस्थल पर एक घंटे तक साधना की और कहा कि बाबा केदार के धाम में आकर शांति और शक्ति का अनुभव हुआ है। सुबह 11 बजे अभिनेत्री केदारनाथ से हेलिकॉप्टर से फाटा पहुंची। यहां से सड़क मार्ग से वह सोनप्रयाग होते हुए त्रियुगीनारायण पहुंची। इस दौरान उन्हें रुद्रप्रयाग-गौरीकुंड और सोनप्रयाग त्रियुगीनारायण मार्ग लगभग दो घंटे जाम से भी दो-चार होना पड़ा।

दोपहर के बाद वह त्रियुगीनारायण मंदिर पहुंची और भगवान बामन के दर्शन किए। साथ ही भगवान शिव व पार्वती के विवाह की साक्षी अखंड ज्योति के दर्शन किए और ज्योति में लकड़ी दान की। उन्होंने कहा कि वह उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता से अभिभूत हैं। बार-बार आने का मन करता है। ज्ञात हो कि फिल्मी अभनेत्री नंदिनी राय एक मई को गौरीकुंड से केदारनाथ पैदल पहुंची थी।

स्कूल शिक्षा महानिदेशक के खिलाफ आंदोलन की रणनीति तैयार

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ वाराणसी ने गठित की अपनी जनपदीय संघर्ष समिति, कार्यकारी जिला अध्यक्ष ज्योति प्रकाश को बनाया गया धरना स्थल प्रभारी एवं प्रचार समिति का संयोजक

प्रखर वाराणसी। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ वाराणसी के पुर्व निर्धारित कार्यक्रम के अंतर्गत जिला एवं ब्लाक पदाधिकारियों की बैठक जिलाध्यक्ष शशांक कुमार पाण्डेय"शेखर" की अध्यक्षता में सिगरा स्थित संघ भवन में आयोजित हुई जिसका संचालन जिला महामंत्री आनंद कुमार सिंह ने किया। बैठक में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश द्वारा शिक्षकों शिक्षामित्रों अनुदेशकों रसोइयों की समस्याओं के समाधान हेतु दिए गये ज्ञापनों पर महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरण आनंद द्वारा कोई निर्णय न लेने पर उनके खिलाफ आंदोलन करने के निर्णय के क्रम में जिले में प्रस्तावित धरने की सफलता के लिए जिला संघर्ष समिति का गठन किया गया जिसका जिला संयोजक सत्यप्रकाश पाल को तथा सह संयोजक अरविंद द्विवेदी, रमा रुखैयार, आशा पाठक, संजीव त्रिपाठी, अनुराधा भार्गव, कुमुद सिंह, आरती गुप्ता, अमिताभ राय, आनंद सिंह, रामतीरथ पटेल, संजय पाण्डेय, संजय पाठक, चंद्रमोहन यादव, पवन सिंह तथा वीरेंद्र कुमार सिंह को बनाया गया। बैठक आगामी 20,21,22 जून को क्रमशः महानिदेशक के खिलाफ जिला बेसिक शिक्षाधिकारी को दिए जाने वाले ज्ञापन, जिला बेसिक अधिकारी कार्यालय तक निकाले जाने वाले शांति मार्च तथा जिला बेसिक शिक्षाधिकारी कार्यालय पर होने वाले धरने की सुचारु व्यवस्था के लिए धरना स्थल प्रभारी के रूप में कार्यकारी जिला अध्यक्ष ज्योति प्रकाश, राजन सिंह, आशुतोष पाण्डेय, प्रभात सिंह, वीरेंद्र कुमार सिंह, चंद्रमोहन यादव तथा संजय सिंह के नाम का प्रस्ताव पास किया गया। महानिदेशक स्कूल शिक्षा के खिलाफ उत्तर प्रदेश के इतिहास में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा घोषित आंदोलन किसी भी संगठन द्वारा किया जाने वाला पहला आंदोलन है जिसकी सफलता हेतु प्रिंट मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सोशल मीडिया यू ट्यूब के माध्यम से शिक्षकों में व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता को देखते हुए एक प्रचार समिति का गठन किया गया जिसका संयोजक राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ वाराणसी के कार्यकारी जिलाध्यक्ष ज्योति प्रकाश को बनाया गया, तथा सह संयोजक संजीव त्रिपाठी,आशुतोष पाण्डेय, चंद्रप्रताप नारायण सिंह को बनाया गया। बैठक में जिलाध्यक्ष,जिला महामंत्री के अलावा कार्यकारी जिलाध्यक्ष ज्योति प्रकाश,वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश पाल,जिला संयुक्त महामंत्री आशुतोष पाण्डेय,जिला मंत्री संतोष कुमार पाण्डेय,जिला संयुक्त मंत्री संजीव त्रिपाठी व रितु ओबराय, कार्यकारी अध्यक्ष आराजीलाइन्स ब्लाक अमिताभ राय,महामंत्री हरहुआ ब्लाक वीरेंद्र कुमार सिंह,महामंत्री नगरक्षेत्र चंद्र मोहन यादव, प्रभारी काशी विद्यापीठ ब्लाक डा० संजय गुप्ता,महामंत्री सेवापुरी ब्लाक रामतीरथ पटेल शामिल रहे।

समर कैंप का हुआ आयोजन

प्रखर गंभीरपुर /आजमगढ़। विकास खण्ड ठेकमा के उच्च प्राथमिक विद्यालय उदियावां पर समर कैम्प का भव्य आयोजन किया गया।कैम्प प्रभारी प्रधानाध्यापक अजीत कुमार राय के कुशल नेतृत्व में परिषदीय स्कूल के बच्चों के लिए गर्मी की छुट्टियों में समर कैम्प का आयोजन किया गया।इसमें बच्चे कला ,क्राफ्ट, खेल के माध्यम से मनोरंजन करते हुए सीखेंगे।बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ प्रतिभाग किया। यह समर कैंप तीन दिन रहेगा। इसमें प्रधानाध्यापक अजीत कुमार राय के द्वारा बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई है। ग्रामवासियों ने इस तरह के प्रयास की सराहना करते हुए खुशियां जाहिर की है।बच्चों के द्वारा चार्ट पेपर ,निष्प्रयोज्य सामग्री से टी एल एम बनाया गया।इस अवसर पर विद्यालय के बच्चे उपस्थित रहे।

आगजनी में लोगों को बचाने वाले पुलिकर्मियों को एसपी व विधायक ने किया सम्मानित

प्रखर कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल व विधायक फाजिलनगर सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा के द्वारा आज पुलिस कार्यालय में विगत दिनों थाना पटहेरवा क्षेत्रान्तर्गत एक दुकान में शार्ट सर्किट से लगी आग की घटना में अदम्य साहस का परिचय देते हुए 01 महिला व 02 बच्चियों को आग की चपेट से बचाने वाले पुलिसकर्मियों को प्रशस्ति पत्र व नगद पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

पुरस्कृत किये जाने वाले पुलिस टीम- 1-आरक्षी अर्जुन खरवार, थाना पटहेरवा जनपद कुशीनगर 2-आरक्षी आनन्द गुप्ता थाना पटहेरवा जनपद कुशीनगर 3-आरक्षी बिनोद यादव थाना पटहेरवा जनपद कुशीनगर 4-आरक्षी सोहित यादव थाना पटहेरवा जनपद कुशीनगर

अज्ञात ट्रक की चपेट में आने से हाथी गंभीर घायल वही हाथी चालक दो महावत भी घायल, एक की हालात गंभीर जिला अस्पताल रेफर

प्रखर गंभीरपुर आजमगढ़। गंभीरपुर थाना क्षेत्र के गंभीरपुर बाजार के निकट बाबा विश्वनाथ दास मंदिर के पास मंगलवार की सुबह लगभग 6:00 बजे अज्ञात ट्रक के चपेट में आने से एक हाथी व उसके दो महावत घायल हो गए जिसमें एक महावत की हालत गंभीर बनी हुई है। मिली जानकारी के मुताबिक थाना गंभीरपुर के गंभीरपुर मे एक वैवाहिक समारोह में हाथी को सम्मलित होना था।इसके लिए आज सुबह 6 बजे ठेकमा की तरफ से हाथी आ रही थी हाथी जैसे ही गंभीरपुर बाजार के निकट बाबा विश्वनाथ नाथ जी के कुटी के पास पहुंची की पीछे से तेज गति से आ रहा एक ट्रक हाथी को टक्कर मारते हुए निकल गई। जिसमें हाथी को गंभीर चोट आई जिसकी कमर पर काफी चोटें लगी हैं वहीं हाथी चालक महावत सरदार पुत्र मोनू व नासिर पुत्र गफूर निवासी रामपुर कठरावा थाना देवगांव को गिरने से काफी गंभीर हो गए हैं। आनन-फानन में स्थानीय लोगों व पुलिस ने दोनों महावत को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मोहम्मदपुर ले गए। जहां नासिर की हालत गंभीर देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल के लिए रिफर कर दिया। जानकारी पाकर थाना गंभीरपुर प्रभारी मुरारी मिश्रा, एलआईयू स्पेक्टर हौशीला यादव, वन विभाग व पशु चिकित्सालय के डॉक्टर रमेश मौके पर पहुंचे पशु चिकित्सक डॉ रमेश द्वारा हाथी का घंटों इलाज किया गया इलाज के उपरांत हाथी खड़ा हुआ उसके बाद हाथी मालिक दूसरे महावत को बुलवाकर हाथी को अपने साथ लेकर गई।

सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त ने किया स्वतंत्रता सेनानी रामचंद्र शर्मा के मूर्ति का अनावरण

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। विकास खंड भांवरकोल क्षेत्र के लौवाडीह गांव के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व समाजवादी चिंतक पं रामचंद्र शर्मा की 11 वी पुण्यतिथि के अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त द्वारा सांसद निधि से निर्मित सेनानी पार्क का लोकार्पण व स्व0 शर्मा के प्रतिमा का अनावरण किया गया।इस अवसर पर सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त ने अपने संबोधन में कहा कि करइल की मिट्टी में अद्भुत शक्ति है। जिस किसी भी क्षेत्र में इस मिट्टी के लोग है, उसमें वे सर्वोच्च है। कुश्ती के क्षेत्र में मंगला राय है, तो साहित्य में विवेकी राय है, तो वही पत्रकारिता में रामबहादुर राय ने सर्वोत्तम शिखर को छुआ है। इसी मिट्टी से पं0 रामचंद्र शर्मा थे जिन्होंने भाषायी भिन्नता के बावजूद पश्चिम बंगाल में अपना परचम लहराया। इन्होंने आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया वही आजादी के बाद जब लोकतंत्र खतरे में पड़ गया तब आगे बढ़कर इमरजेंसी का विरोध किया। उन्होंने कहा कि उन्हें स्वामी सहजानंद के साहित्य को पढ़कर सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है क्योंकि भारत के 72 प्रतिशत किसान है, अगर किसान समृद्ध होगा। किसानों की दशा सुधारने के लिए यह सरकार काफी प्रयास कर रही है।अभी 40 प्रतिशत खेतो में दो फसलें पैदा होती है इसका क्षेत्रफल धीरे धीरे बढ़ाना होगा। इस अवसर पर उन्होंने सेनानी पार्क के लिए वाचनालय देने की भी घोषणा की।इस अवसर पर राज्य पुरस्कार प्राप्त किसान पंकज राय को सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त ने सम्मानित किया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि ने कहा कि पं0 रामचंद्र शर्मा का आजादी में योगदान अतुलनीय है । इस क्षेत्र के लोगो के लिए वे हमेशा प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। इस अवसर पर पूर्व विधायक अलका राय, वीरेंद्र राय, डॉ व्यासमुनि राय, प्रो पीयूष कांत राय राय, प्रो शशांक राय, पंकज राय, अनिल राय मुन्ना, राजेश राय बागी, रविन्द्र नाथ राय, हिमांशु राय, कृष्णानंद राय, देवा सिंह, संपूणानंद उपाध्याय,नथुनी सिंह ,सतीश राय,आदि मौजूद रहे।सभा की अध्यक्षता सत्येंद्र राय तथा संचालन शशांक शेखर राय ने किया।अन्त में ग्राम प्रधान रविशंकर राय संजू ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

युवक की हत्या करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार, अन्य की तलाश जारी

घटना में प्रयुक्त राड व मृतक की मोटर साइकिल बरामद

प्रखर पिंडरा वाराणसी। थाना फूलपुर क्षेत्र के 5 दिन पूर्व घर से बुलाकर युवक की हत्या करने के मामले में पुलिस ने आरोपित को सोमवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। वही अन्य के तलाश में पुलिस जुटी हुई है। विदित हो कि करखियांव निवासी निलेश सिंह पुत्र राधेश्याम सिंह नामक युवक 1 जून की रात्रि में लगभग साढ़े 8 बजे अपने घर से निकला और घर वापस नही आया । जिसमें पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर जांच में जुटी थी तभी 2 जून को करखियाव स्थित पोखरी में उक्त युवक का शव बरामद हुआ था। मृतक के पिता राधेश्याम सिंह के तहरीर पर पुलिस ने धारा 302, 201भादवि के तहत प्रीतम चौहान पुत्र शमसेर चौहान, सुजीत पटेल पुत्र तिलकधारी पटेल निवासीगण करखियांव थाना फूलपुर जनपद वाराणसी व कुछ अन्य लोगों के खिलाफ अज्ञात में मुकदमा पंजीकृत किया गया था। घटना के बाद पुलिस के उच्चाधिकारियों द्वारा का घटना स्थल का निरीक्षण कर खुलासे का निर्देश दिया था। उसी क्रम में सहायक पुलिस आयुक्त पिण्डरा अमित पांडेय के नेतृत्व में थाना फूलपुर को टीम गठित कर हुई थी। पुलिस टीम द्वारा अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु सभी सम्भावित स्थानों पर लगातार दबिश दी जा रही थी। इसी क्रम में 5 जून को फूलपुर पुलिस द्वारा निलेश सिंह की हत्या करने वाले अभियुक्त सुजीत पटेल पुत्र स्व0 तिलकधारी पटेल, निवासी ग्राम करखियांव को गिरफ्तार कर उसके निशादेही पर घटना में प्रयुक्त लोहे का राड व मृतक की मोटरसाइकिल बरामद कर उसे जेल भेज दिया। पूछताछ के दौरान अभियुक्त सुजीत पटेल ने बताया की पैसे के विवाद को लेकर मैने अपने साथी सत्यम चौहान पुत्र लालबहादुर चौहान व राजन यादव पुत्र मुन्ना यादव, निवासीगण करखियांव की मदद से निलेश सिंह की लोहे की राड से मार कर हत्या कर दिये थे और शव को पोखरे मे छिपा दिया थे। पुलिस अभियुक्त के साथी सत्यम चौहान एवं राजन यादव की तलाश की जा रही है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में प्र0नि0 प्रवीन कुमार, उ0नि0 राजेश सिंह, चौकी प्रभारी औद्योगिक नगर रविप्रकाश सिंह रहे। इस बाबत एसीपी अमित पांडेय ने बताया कि फरार अभियुक्त को जल्द ही गिरफ्तार होंगे।

सीएम के जन्मदिवस पर मां गंगा का दुग्धाभिषेक व 251 यूनिट रक्तदान

51 की संख्या हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखती है - कमिश्नर

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 51वें जन्मदिवस पर त्रिशक्ति सेवा फाउंडेशन व हिंदू युवा वाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में जिला महिला चिकित्सालय कबीरचौरा के सभागार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान 251 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ कार्यक्रम का नेतृत्व हिंदू युवा वाहिनी के मंडल प्रभारी व वाराणसी विकास प्राधिकरण के मानद सदस्य अंबरीश सिंह भोला ने किया` शिविर में कार्यकताओं व पदाधिकारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया इससे पहले सुबह काशी विश्वनाथ का दर्शन कर ललिता घाट काशी विश्वनाथ द्वार पर 21 बटूकों के साथ पूजा-पाठ संपन्न हुआ साथ ही मां की चुनरी और 51 लीटर दूध से मां गंगा का दुग्धाभिषेक किया गया। रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे कमिश्नर कौशल राज शर्मा ने कहा कि सीएम योगी आदित्यनाथ की 51वीं वर्षगांठ है जोकि हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखती है` इस मौके पर हिंदू युवा वाहिनी का कार्य सराहनीय है दरअसल, ब्लड जाति व धर्म नहीं देखता है और ब्लड यानी खून एक ऐसी चीज है जिसे बनाया ही नहीं जा सकता मनुष्य ही दूसरे मनुष्य को ब्लड दे सकता है समय-समय पर सभी को रक्तदान करना चाहिए। दान किए गए रक्त से कई लोगों की जिंदगी बच सकती है हियुवा ने 51 यूनिट का लक्ष्य रखा था लेकिन बड़ी बात यह है कि 251 की संख्या पहुंच गई है कोरोना काल में भी हियुवा ने अच्छा काम किया` अंबरीश सिंह भोला ने कहा कि हिंदू युवा वाहिनी हर कठिन समय में लोगों के साथ खड़ा है कोरोना काल में जब सभी लोग अपनी इम्यूनिटी को लेकर चिंतित थे उस समय हिंदू युवा वाहिनी के कार्यकताओं ने बढ़- चढ़कर ब्लड डोनेट किया था` मंडलीय अस्पताल के चिकित्साधिकारी डा. सीपी सिंह ने कहा कि ब्लड का अब तक कोई विकल्प नहीं खोजा जा सका है आर्टिफिशियल ब्लड नहीं है ब्लड बैंक के कारण ही मैंने मरते हुए लोगों को जिंदगी पाते देखा है। इस मौके पर मुख्य रूप से रामनाथ महाराज महंत गोरखनाथ मठ, महिला चिकित्सालय की सीएमएस मनीषा सिंह सेंगर, नि.जिला अध्यक्ष आशु सिंह, संजीव सिंह, महानगर प्रभारी नी0 मनीष मिश्रा, महानगर सयोजक नी0 सुनील कुशवाहा, महानगर अध्यक्ष अजय सिंह, महानगर मिडिया प्रभारी अश्वनी गुप्ता,सन्नी गुप्ता, ओमप्रकाश जायसवाल, विनय, उमेश, रौनक सिंह, बाबू, गप्पू सिंह, दिनेश, प्रतीक श्रीवास्तव, अशुल तिवारी, गुरु प्रसाद, सन्नी मौर्य, सौरभ सिंह एवम समस्त 12 मंडल इकाई देवतुल्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

चोरी के समान सहित आरोपित को भावरकोल पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भांवरकोल थाना क्षेत्र अन्तर्गत मिजार्बाद गांव में गत दिनों हुई चोरी के मामले में पुलिस ने नामजद आरोपी को तेतरिया मोड़ से मंगलवार की सुबह गिरफ्तार कर चोरी का पदार्फाश का दावा किया है। गिरफ्तार आरोपी दिनेश कुशवाहा इसी थाना क्षेत्र के मिजार्बाद गांव का निवासी है। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर चोरी गए एक अदद हार मोती नग का, सोने का दो झाला, एक अंगूठी, दो पायल, एयर बैग राशन गैस सिलेण्डर आदि सामान बरामद किया है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक सत्येंद्र कुमार राय ने बताया कि थाने के एसआई विकास सिंह अपने हमराहियों के साथ वांछितों की तलाश में भ्रमणशील थे। इसी बीच सूचना मिली कि चोरी के मामले का आरोपी तेतरिया मोड़ के पास खड़ा है। मौका रहते पुलिस टीम ने उसे दबोच लिया। उसकी निशानदेही पर चोरी का समान बरामद किया गया। गिरफ्तार आरोपी को वांछित धाराओं में न्यायालय में पेश किया गया जहा जेल भेज दिया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में एस आई विकास सिंह, कांस्टेबल आकाश सिंह, महिला कांस्टेबल प्रीति गिरी आदि शामिल रहे।

संक्षिप्त खबरें

विश्व पर्यावरण दिवस पर दी नो प्लास्टिक इन कंट्री - अंतर्राष्ट्रीय हिंदू महासभा

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। विश्व पर्यावरण दिवस अंतर्राष्ट्रीय हिंदुमहासभा के प्रदेश महासचिव संपूर्णा नंद पाण्डेय ने कहा की पूरे देश को नो प्लास्टिक जोन बना देना चाहिए और सभी लोग को कोशिश करना चाहिए की साल भर के सभी दिनों को पर्यावरण दिवस की तरफ मनाना चाहिए यदि ऐसा नही हो सकता तो साल में बारह महीने होते है और उस है मंथ में एक पौधा सभी व्यक्ति लगाए अपने परिवार के सभी जन्मदिन हो या कोई शुभ कार्य हो जरूर पौधा रोपण करना चाहिए`नाले नदियों तालाबों को स्वक्ष रखे प्लास्टिक के स्थान पे कागज या कपड़े के बने झोले या थैले का इस्तेमाल करे बहुत अधिक दूरी न जाना हो तो साइकिल का इस्तेमाल करे जिससे पलूशन कम होगा और पर्यावरण सुरक्षित रहेगा। बिजली का दुरुपयोग नहीं करे इस्तेमाल होने के बाद पंखे, बल्ब,इत्यादि चीजे बंद करके रखे पूरे विश्व में हर साल 55 करोड़ टन प्लास्टिक कचरे का उत्पादन होता है जिसमे विषैले केमिकल पाए जाते है जो पर्यावरण को दूषित करते है इसलिए नो प्लास्टिक इन कंट्री का मंत्र जरूरी है।

पर्यावरण दिवस पर उद्यमियों ने औद्योगिक अस्थान, चांदपुर में लगाया पौधा - लघु उद्योग भारती काशी प्रांत

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। औद्योगिक अस्थान चांदपुर मे उद्यमियों के कारखानों सहित एमएसएमई डीएफओ वाराणसी परिसर मे लघु उद्योग भारती काशी प्रांत के उद्यमियों ने एमएसएमई विभाग के अधिकारियो के साथ पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया ` राजेश कुमार सिंह अध्यक्ष लघु उद्योग भारती काशी प्रांत ने बतलाया की प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी पर्यावरण दिवस पर एमएसएमई विभाग सहित उद्यमियों के औद्योगिक अस्थान परिसर मे लगभग 51 पेड़ आम, लीची, अमरूद,अशोक, पपीता आदि के पेड़ लगाए गए है जिनकी सुरक्षा का दायित्व उद्यमियों को सौंपा गया है संगठन का उद्येष्य काशी प्रांत के प्रत्येक औद्योगिक अस्थान सहित कारखानों को प्रदूषण मुक्त बनाना है इस सीजन में कुल 1000 पेड़ संगठन लगवाएगा। वी के राना असिस्टेंट डायरेक्टर एमएसएमई ने उद्यमियों से आग्रह किया की वह अपने परिसर को स्वच्छ एवं हरित रखें उन्होंने प्लास्टिक प्रदूषण पर ध्यान केंद्रित करते हुए औद्योगिक परिसरों को इससे मुक्त रखने का उद्यमियों से आग्रह किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम मे वी के राना ,जीतेश बरनवाल असिस्टेंट डायरेक्टर एमएसएमई, हिमांशु शेखर कस्टोडियन एमएसएमई सैमसंग तथा राजेश सिंह, राजकुमार रस्तोगी ,अभय गुप्ता, नयन गुप्ता, सर्वेश श्रीवास्तव, ज्योति शंकर मिश्रा, गुलशन मौर्या ,उद्यमियों ने भाग लिया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का जन्म दिवस मनाया गया एवं वृक्षारोपण किया गया

प्रखर रामनगर उतर प्रदेश के लोकप्रिय यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के जन्म दिवस के अवसर पर रामनगर नई बस्ती घाट पर दीघार्यु के लिए हवन पुजन किया गया पुनः विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण का कार्य किया गया। विगत दिनों उड़ीसा के बालासोर ट्रेन दुर्घटना में मृतकों की आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखा गया। कार्यक्रम का संयोजक गुलाब कार्यसमिति सदस्य नगर मंत्री किशन जायसवाल मुख्य अतिथि मोनिका यादव व मनोज यादव एवं राजकुमार सिंह युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष मुकेश कसेरा वर्मा जी अंशुमन भाजपा आईटी सेल संयोजक दुर्गा सहानी जी कैलाश कुशवाहा जी राहुल कुमार आकाश गोस्वामी जी संदीप मौर्य जी विवेक मिश्रा उपाध्यक्ष जी आशुतोष जी अमन सोनी जी शुभम बारी जी हंसराज प्रजापति विजय सिंह जी राजेश भारती जी सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

एसपी ने मड़ियाहूं थाना का किया वार्षिक निरीक्षण

प्रखर जौनपुर। पुलिस अधीक्षक अजय पाल शर्मा द्वारा मड़ियाहूं थाना का वार्षिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अपराध रजिस्टर, हिस्ट्रीशीट,आगन्तुक रजिस्टर, महिला हेल्प डेस्क रजिस्टर आदि का अवलोकन किया गया तथा थाना कार्यालय, मलखाना, मेस, थाना प्रांगण आदि की साफ सफाई का निरीक्षण कर सम्बंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। उधर एसपी सिटी बृजेश कुमार गौतम ने पुलिस लाइन्स परेड ग्रांउड में मंगलवार के परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का निरीक्षण किया गया तत्पश्चात पुलिस लाइन में भ्रमण कर विभिन्न शाखाओं, भोजनालय, शस्त्रागार तथा बैरिकों आदि का निरीक्षण कर रखरखाव व सफाई पर विशेष ध्यान देने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया।

प्रखर पूर्वांचल
RNIUPHIN/2016/68754
मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोड: 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित
सम्पादकीय कार्यालय: 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोड: 233001
सम्पर्क सूत्र: 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802
सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।
ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com
सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं